



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना), दिल्ली



संवाद

विभागीय वार्षिक गृह-पत्रिका

पंचम अंक
(सितम्बर, 2023)

तृतीय तल, ए-विंग, इंद्रप्रस्थ भवन, आई पी एस्टेट, नई दिल्ली - 110002

संवाद समिति



सुश्री अतूर्वा सिन्हा
प्रधान निदेशक, लेखापरीक्षा (अवसंरचना)



श्री अजय कुमार कृपाशंकर
निदेशक (प्रशासन)



सुश्री लीमा बैजू, व.ले.प.अ. (प्रशासन)



सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी



डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक



सुश्री अन्नू बाजपाई, कनिष्ठ अनुवादक



सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

संवाद



"सरस्वती वन्दना"

वर दे, वीणावादिनि वर दे,
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

काट अंध-उर के बंधन-स्तर,
बहा जननि, ज्योतिर्मय निर्झर,
कलुष-भेद-तम हर प्रकाश भर,
जगमग जग कर दे,

वर दे, वीणावादिनि वर दे।
प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

नव गति, नव लय, ताल-छंद नव,
नवल कंठ, नव जलद-मन्द्ररव,
नव नभ के नव विहग-वृंद को,
नव पर, नव स्वर दे,

वर दे, वीणावादिनि वर दे,
वर दे, वीणावादिनि वर दे।

प्रिय स्वतंत्र-रव अमृत-मंत्र नव,
भारत में भर दे।

गृह मंत्री जी का संदेश

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार



प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम 'हिंदी' है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ-साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **‘देसिल बयना सब जन मिट्टा’** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन-जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **‘कंठस्थ’** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न **‘विश्व हिंदी सम्मेलन’** में **‘न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन’** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

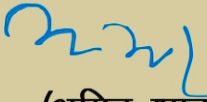
राजभाषा विभाग की एक नई पहल **‘हिंदी शब्द सिंधु’** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **‘लीला हिंदी प्रवाह’** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा-भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी-अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई-मेल, विज्ञापित आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023


(अमित शाह)

संवाद



प्रधान निदेशक महोदया का संदेश



कार्यालय की वार्षिक हिंदी पत्रिका "संवाद" के पंचम अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। सम्पादकीय समिति के सभी सदस्यों को मैं इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु उनके कार्य एवं प्रयास के लिए हार्दिक बधाई देती हूँ।

इस पत्रिका का उद्देश्य कार्यालय के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों में हिंदी के प्रति उत्साह एवं लगाव को प्रोत्साहित करना है। मुझे विश्वास है कि इस पत्रिका के लिए किये गए प्रयास आशापूर्ण परिणाम लायेंगे। यह भी आशा है कि यह पत्रिका हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी।

पत्रिका की सफलता हेतु शुभकामनायें!

(अतूर्वा सिन्हा)

प्रधान निदेशक



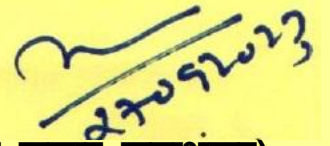


निदेशक (प्रशासन) महोदय की कलम से



मैं कार्यालय की हिंदी पत्रिका के पंचम अंक के विमोचन के लिए अपार हर्ष महसूस कर रहा हूँ। रचनाकारों ने इस पत्रिका में अपनी रचनात्मकता के सभी पहलुओं के माध्यम से अपनी प्रतिभा को उद्घाटित किया है। कार्यालय के कर्मठ अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सहयोग से राजभाषा विभाग के वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों का समुचित पालन किया जा रहा है।

इस हिंदी पत्रिका में रचनाकारों ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपना पूरा सहयोग प्रदान किया है। मैं पत्रिका के सफल सम्पादन हेतु सम्पादक समिति व रचनाकारों को राजभाषा हिंदी के प्रति इस निष्ठा के लिए हृदय से आभार प्रकट करता हूँ तथा पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु शुभकामनायें देता हूँ।


(अजय कुमार कृपाशंकर)
निदेशक (प्रशासन)





लीमा बैजू
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी



पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

सम्पादकीय



प्रिय पाठक गण,

कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना), दिल्ली में कार्यरत अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने अपनी रचना प्रतिभा के माध्यम से अपने मन के भावों को शब्दों के धरातल पर उतारकर नवीनतम एवं श्रेष्ठ रचनाओं को आप तक पहुँचाने का प्रयास किया है। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में सहयोग प्रदान करती है। पत्रिका में सम्मिलित किए गए लेख एवं रचनायें सारगर्भित एवं प्रेरणादायी हैं। सरकारी कर्मचारी होने के नाते सरकार की राजभाषा नीति का पालन करना हमारा उत्तरदायित्व है। अतः हमें यह कहने में गर्व है कि हमारा संगठन भी राजभाषा नीतियों को अमल करने में अग्रसर है।

हम हृदय से सभी लेखकों का भी आभार प्रकट करना चाहते हैं, जिन्होंने रचनायें प्रेषित कर इस पत्रिका का प्रकाशन सम्भव बनाया और साथ ही समालोचकों का, जिनके माध्यम से पत्रिका को बेहतर बनाने का प्रयास किया गया। सभी पाठकों से सहृदय अनुरोध है कि कृपया अपने बहुमूल्य सुझाव हमें प्रेषित करें। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनायें।

सम्पादक मंडल



संवाद समिति

संरक्षक

श्रीमती अतूर्वा सिन्हा,
प्रधान निदेशक
श्री अजय कुमार कृपाशंकर,
निदेशक (प्रशासन)

(सम्पादकीय समिति)

सुश्री लीमा बैजू, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी
डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक
सुश्री सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक

(विशेष आभार)

श्री विक्की भारती, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

(अस्वीकरण: पत्रिका में व्यक्त विचार एवं भावनाएँ लेखक के अपने हैं, अतः कार्यालय एवं सम्पादक मंडल का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।)



अनुक्रमणिका

क्र. सं.	विषय	रचना	रचनाकार/संकलनकर्ता का नाम श्री/श्रीमती/सुश्री	पृष्ठ सं.
1.	क्या कीमत है	कविता	मनोज मधुकर कस्तूर, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	1
2.	देश की आत्मा - हिंदी	लेख	पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी	2-4
3.	छोड़ आए गाँव	कविता	अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक	5-6
4.	कर्म का मर्म	लेख	डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक	7-8
5.	इतिहास गवाह है	लेख	मेघा कौशिक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	9
6.	मुझे गर्व है	कविता	वरुण त्यागी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	10
7.	रफ काँपी	लेख	आशीष कुमार, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	11
8.	प्रकृति या विकास	लेख	मेघा कौशिक, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी	12
9.	बिटिया	कविता	गुंजन जाजोरिया, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	13
10.	प्रकृति का अनमोल उपहार - योग	लेख	गीतिका चुघ, पर्यवेक्षक	14
11.	ज़िन्दगी बस यही है	कविता	राजेश कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	15
12.	भारतीय परिदृश्य में महिलाओं का भाषागत सशक्तीकरण	लेख	अन्नू बाजपेयी, कनिष्ठ अनुवादक	16-17
13.	जीवन एक यात्रा	लेख	सुप्रिया सिंह, कनिष्ठ अनुवादक	18
14.	आज़ादी प्यारी	कविता	अंकित शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	19-20
15.	समय की कीमत	लेख	राजेश कुमार सिंह, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	21-22
16.	तारीफ़ का पुतला	कहानी	अमित कुमार, लेखापरीक्षक	23-27
17.	एक यात्री की लेह-लद्दाख यात्रा	यात्रा वृत्तांत	मोहित तोमर, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी	28-32
18.	मेरी माँ	कविता	अमित कुमार, लेखापरीक्षक	33-34
19.	सैनिक की कलम से	अनुभव वृत्तांत	मनोज कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक	35-37

संवाद



मनोज मधुकर कस्तूर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

क्या कीमत है....?



क्या कीमत है, इन सूरज, चाँद सितारों की,
चलती हुई हवा और बहते हुए पानी की,
क्या कीमत है, हरे पत्तों और महकते फूलों की,
ईश्वर की बनाई इस खूबसूरत कुदरत की...,
क्या कीमत है, इस संसार में हमारे होने की...

क्या कीमत है, उदास चेहरों के पीछे छिपी नम आँखों की,
छोटे से झगड़े पर उभरते दुश्मनी भरे जज्बातों की,
क्या कीमत है, निरंतर कम होते नैतिक मूल्यों की,
स्वयं की महत्वाकांक्षाओं को अपनों से ऊपर रखने की,
क्या कीमत है, आज इस बदलते हुए इंसान की....

क्या कीमत है, समाज में आ रहे प्रतिकूल बदलाव की,
बदलते परिवेश में अपना अस्तित्व बनाये रखने की,
असामाजिक तत्वों से अपने सम्मान की रक्षा करने की,
निरंतर बढ़ते अपराधों में नारी की गरिमा बनाये रखने की,
क्या कीमत हैं, अनिश्चितताओं में स्वाभिमान भरे फैसलों की,

पर यह दिल कहता है, हर चीज की कुछ कीमत होती है,
सपनों से हौसले की उड़ान भरने तक की कीमत होती हैं,
असफलताओं के बाद मिले अनुभव की....,
चकाचौंध भरी दुनिया में मिले आत्मसंतोष की...

और इस कीमत को चुका पाना ही बहुत बड़ी कीमत होती है।



पूनम शर्मा
हिंदी अधिकारी

देश की आत्मा- हिंदी

भारतेंदु हरिश्चंद्र की प्रसिद्ध पंक्ति 'निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल, बिन निज

भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को मूल' अर्थात् अपनी भाषा से ही उन्नति संभव है, क्योंकि यही सारी उन्नतियों का मूलाधार है और मातृ भाषा के ज्ञान के बिना हृदय की पीड़ा का निवारण संभव नहीं है। किंतु एक दिन मैं, इन्हीं पंक्तियों पर पुनः विचार करने को विवश हो गई, जब मैट्रो से सफर करने के दौरान मैंने देखा कि यात्री डब्बे में दो लड़कियाँ आपस में बात करते हुए, अपने गंतव्य को ऊपर लगी हिंदी की सूची में देखने लगी, उनमें से एक अंग्रेज़ी में बोली **"यार आई डॉट अंडरस्टैंड दिस हिंदी"** और यह कहकर दूसरी तरफ लगी अंग्रेज़ी सूची को देखने लगी। उनके पास खड़ी मैं, यह सुनकर आश्चर्य में पड़ गई कि क्या इनकी निज भाषा अंग्रेज़ी है? पर लग तो वह भारतीय ही रहीं हैं। फिर ऐसा क्यों है कि, अपने ही देश में लोग, अपनी ही भाषा हिंदी को पढ़ने में इतने असहज हैं? क्यों उन्हें अपनी भाषा के प्रति गौरव की अनुभूति नहीं होती? ऐसे कई और उदाहरण हैं, जिनको निश्चित तौर पर हम सब, अपने आस-पास देखते होंगे। जहाँ विशेषकर आज की युवा पीढ़ी, हिंदी की तुलना में अंग्रेज़ी में बोलना, लिखना अधिक पसंद करती है। आखिर ऐसा क्यों है? क्यों विदेशी भाषा से इतना प्रेम और आसक्ति तथा अपनी भाषा से इतनी दूरी? आखिर ऐसा क्यों है कि आज शिक्षा, विज्ञान, तकनीक और रोजगार की भाषा अंग्रेज़ी बन गई है। वर्तमान समय में, यूँ तो हिंदी विश्व बाज़ार की भाषा बन गई है और वैश्विक फलक पर इसे पढ़ाया तक जाने लगा है, किंतु देश के भीतर ही यह दयनीय स्थिति तक पहुँच गई है, जहाँ इसका अपना अस्तित्व ही संकट में देखा जा सकता है।

विद्यार्थी जीवन में छात्र हिंदी को एक विषय के रूप में पढ़ते तो हैं, किंतु उसे आत्मविश्वास के साथ परीक्षा का माध्यम बनाने से डर रहे हैं। उनके भीतर का यह डर अंग्रेज़ी के बढ़ते वर्चस्व से उत्पन्न हुआ है, जिसने हिंदी के साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं को कमजोर और हीन बना दिया है। हिंदी की यह स्थिति आज से उत्पन्न नहीं हुई है, बल्कि इसे ऐसा बनाने में 'अर्थ' यानी पूँजी का महत्वपूर्ण योगदान है, क्योंकि भाषा और अर्थव्यवस्था का बहुत ही गहरा रिश्ता होता है। 'अर्थ' की अनिवार्यता व्यक्ति को भाषा, राज्य और देश से पलायन को मजबूर बनाती है। आज हिंदी ग्लोबल तो हुई है, लेकिन

स्थानीय स्तर पर अंग्रेज़ी का वर्चस्व बढ़ा है। अंग्रेज़ी न जानने के कारण उच्च शिक्षा, ऊँचे अवसरों, रोज़गार से वंचित करोड़ों युवा प्रतिभाएं, कुंठित, अपमानित होने, अपने आत्मविश्वास को तिल-तिल कर मरते देखने, पिछड़ जाने के लिए अभिशप्त हैं। जब तक अंग्रेज़ी के साथ प्रतिष्ठा, सत्ता, नौकरी, अच्छे भविष्य की गारंटी और पैसा जुड़ा रहेगा, तब तक लोगों से यह अपेक्षा करना कि वे अपने बच्चों को अंग्रेज़ी न पढ़ाएँ, एक तथ्य को अनदेखा करना होगा।

देश की प्रतिष्ठित सेवाओं में शुमार संघ लोक सेवा आयोग की परीक्षा भी अंग्रेज़ी के वर्चस्व को तोड़ने में नाकाम रही है, क्योंकि यहाँ हर साल परीक्षा में चयनित विद्यार्थियों में अधिकांश की परीक्षा का माध्यम अंग्रेज़ी होता है। कुछ गिने-चुने छात्र होते हैं जो अपनी मातृभाषा और हिंदी भाषा के ज़रिए इस पद तक पहुंच पाते हैं। पिछले वर्ष (2022) सूरत में आयोजित द्वितीय राजभाषा सम्मेलन में भाग लेने के दौरान, ऐसी ही दो विद्वान हस्तियों के वक्तव्यों को सुनकर, अपनी भाषा पर गौरव करने का एक और कारण मिला, जब श्री गंगा सिंह राजपूत एवं श्री निशांत जैन सरीखे आईएएस अधिकारियों ने वहाँ शिरकत की और यह बताया कि किस तरह उन्होंने हिंदी माध्यम से देश की कठिनतम परीक्षा को उत्तीर्ण किया और किस तरह वो, ऐसा हर प्रयास करते हैं, जिससे हिंदी में काम करने के लिए दूसरे भी प्रोत्साहित हों, क्योंकि उनका यह मानना था कि **‘संस्कृति की चादर में भाव के धागे तो मातृभाषा से ही पिरोए जाते हैं’**। किंतु यह दुखद है कि हिंदी में इस परीक्षा को उत्तीर्ण करने वालों का प्रतिशत निरंतर गिरता जा रहा है। हमें बहुत दूर जाने की आवश्यकता नहीं है, कुछ वर्ष पूर्व ही उत्तर प्रदेश में माध्यमिक और उच्चतर माध्यमिक परीक्षाओं में लगभग आठ लाख बच्चों का हिंदी में फेल होना, हिंदी भाषी प्रदेश में ही हिंदी के प्रति उपेक्षित धारणा को दर्शाता है। ऐसे में अन्य हिंदीतर प्रदेशों में हिंदी की स्थिति को समझा जा सकता है। स्वतंत्रता प्राप्ति से पूर्व महात्मा गांधी द्वारा **‘नई शिक्षा प्रणाली’** मातृभाषा के द्वारा शिक्षा की हिमायती थी, लेकिन गाँधी जी की मृत्यु के उपरांत यह व्यवस्था उनका विचार बनकर ही रह गई। आज़ादी के 76 वर्ष उपरांत भी हम अंग्रेज़ी के मोह को त्यागने तथा हिंदी को हृदय से अपनाने में विफल रहें हैं।

यह विचारणीय प्रश्न है कि जब सर्वाधिक बोली जाने वाली हिंदी अपने अस्तित्व को बचाने के लिए संघर्ष कर रही है तो कहीं ऐसा न हो कि उसकी सहयोगी अन्य बोलियाँ और भाषाएँ भी एक समय बाद अपना अस्तित्व खोकर लुप्त हो जाएँ और रह जाएँ सिर्फ अंग्रेज़ी। ऐसे में डर है कि कहीं भाषिक विविधताओं का ये देश भाषिक गुलाम बनकर न रह जाए। हर वर्ष हिंदी दिवस पर हिंदी को बचाने की बहस होती है और यह बहस कितनी कारगर होती है, इसे ज़मीनी स्तर पर देश की अंग्रेज़ी माध्यम से संचालित कार्य प्रणाली में देखा जा सकता है। जहाँ सभी सूचनाओं का पहला प्रसारण अंग्रेज़ी और फिर अनुवाद के रूप में हिंदी व अन्य भाषाओं में आता है। प्रसिद्ध गीतकार श्री प्रसून जोशी जी ने कहा है कि, **‘हमें मिलकर मौलिक राष्ट्र बनाना है, न कि किसी अन्य संस्कृति का अनुवादक’**। अतः हिंदी भाषा को किसी दूसरी भाषा का अनुवादित रूप बनकर नहीं रहना है। अंग्रेज़ी हमारी मातृ भाषा नहीं है, फिर भी इसकी अनिवार्यता ने हमें अपनी मातृभाषा व राजभाषा से दूर अंग्रेज़ी को कार्यभाषा बनाने के लिए विवश कर दिया है।

स्वतंत्रता से पूर्व जिस भाषा ने राष्ट्रीय आंदोलनों को एकता प्रदान की, जिसको एकमत से भारतीयों ने राष्ट्र भाषा माना, वही हिंदी स्वतंत्रता उपरांत बनी परिस्थितियों के कारण राजभाषा बन गई और धीरे-धीरे हिंदी पखवाड़ा, हिंदी दिवस की औपचारिकता तक सिमट गई। गाँधी जी ने अंग्रेज़ी के इस

मोह से पिंड छुड़ाने के लिए 'स्वदेशी' को अनिवार्य अंग माना था, किंतु यह देश की विडंबना ही है, कि वह इस मोह से छूटने की बजाय दिन-प्रतिदिन उसमें जकड़ता जा रहा है। ऐसा कहना अंग्रेज़ी का विरोध करना नहीं है, अपितु यह समझाना है कि यदि भारतीय अंग्रेज़ी का मोह छोड़कर अपनी भाषा का अधिकाधिक प्रयोग करेंगे, तो वह विश्व पटल पर एक मज़बूत भाषा बन कर उभरेगी, जिससे हमारी तथा समस्त राष्ट्र की पहचान और अधिक सुदृढ़ होगी क्योंकि वैश्विक मंच पर जो सम्मान हम अपनी भाषा हिंदी को अपनाकर प्राप्त कर सकते हैं वो अंग्रेज़ी को अपनाकर प्राप्त नहीं कर पाएँगे।

हिंदी को भारत की पहचान के लिए जीवित रहना ही नहीं, मुखर रहना भी आवश्यक है। बिना इसके भारतीयता का कोई अर्थ नहीं रह जाता। हिंदी बहती नदी की धारा की तरह सब के लिए उपयोगी और कल्याणकारी रही है और इसी बात को समझते हुए, हिंदीतर भाषा-भाषी क्षेत्रों के बुद्धिजीवियों, जैसे डॉ.गोपाल स्वामी आयंगर, श्री एम.के. मुंशी तथा डॉ.भीमराव अम्बेडकर ने संविधान सभा में एक मत से नहीं बल्कि एकमत होकर हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकारते हुए उसपर संवैधानिक मोहर लगाई। भारत सरकार द्वारा हिंदी को बढ़ावा देने के लिए हर संभव प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे हिंदी को 'कंठ से कलम, कलम से कम्प्यूटर तथा कम्प्यूटर से कण-कण तक लाया जाए' ताकि देशवासी इसे हृदय से अपनाएँ क्योंकि अपनी भाषा को अपनाकर उसका प्रयोग भी एक प्रकार की राष्ट्र भक्ति ही है, तो आइए हम सब मिलकर चाहे वो किसी कक्षा का विद्यार्थी हो, सरकारी कर्मचारी हो, राष्ट्रीय एवं भाषाई बोध से गर्वित होकर, कष्ट उठाकर, हिंदी को अपनाने का संकल्प करें, तो एक न एक दिन राजभाषा हिंदी को राष्ट्रभाषा हिंदी बनने से कोई रोक नहीं पाएगा और संपूर्ण राष्ट्र में हिंदी का शत-प्रतिशत व्यवहार संभव हो पाएगा। इसके लिए आवश्यकता है उच्च पदासीन अधिकारियों एवं संस्थानों के अध्यक्षों को हिंदी में अधिकाधिक कार्य करके अपने अधीनस्थों के लिए प्रेरणा स्रोत बनने की। जिस प्रकार देश के प्रधानमंत्री स्वर्गीय श्री अटल बिहारी वाजपेई जी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में हिंदी में अभिभाषण देकर, हिंदी के परचम को लहराया और आज उसी परचम को निरंतर लहराने और अधिक ऊँचा फहराने का उत्तरदायित्व हमारे कंधों पर है।

जय हिंदी, जय भारत!





अन्नू बाजपेयी
कनिष्ठ अनुवादक

छोड़ आये गाँव

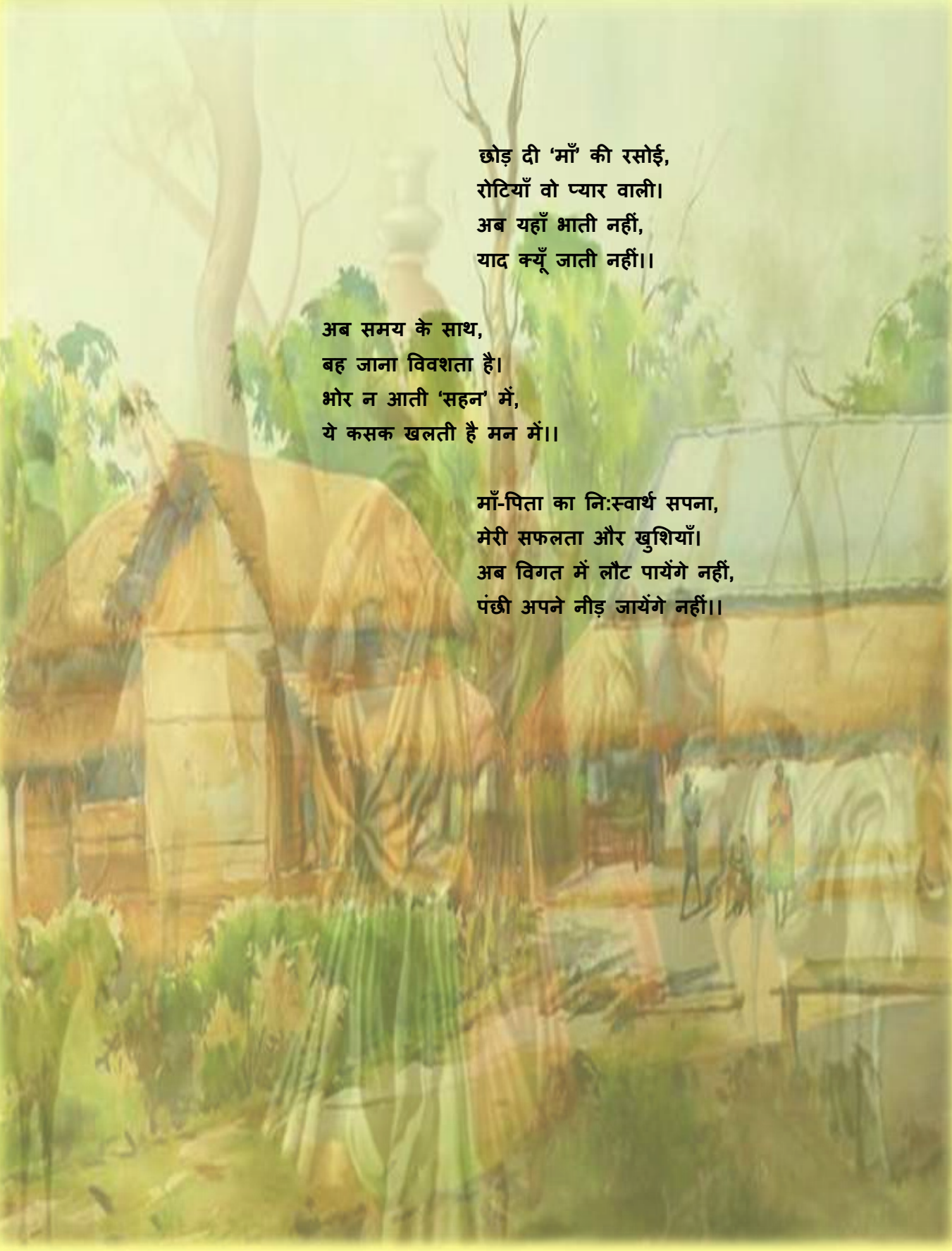
छोड़ आये गाँव हम,
माता-पिता की छाँव हम।

वसुधा सरीखी भित्तिyaँ,
अम्बर सरीखी एक छत।
भोर का आलस लड़कपन,
और उर्नीदे से नयन॥

तोता,तीतर,मोर,बुलबुल,
नीम,पीपल,आम,जामुन।
लौटते गोधूलि बेला,
ढोर संग बच्चों का मेला॥

गाँव के कुछ रंग छूटे,
जामुनी,टकसाल,मिट्टी।
दूधिया और सरसई,
इन्द्रधनुषी रंग सारे सुरमई॥

हाँ! एक कुआँ भी था,
जहाँ पर होड़ लगती थी।
नाराज़गी और मेल भी थे,
सच कहूँ ये खेल ही थे॥



छोड़ दी 'माँ' की रसोई,
रोटियाँ वो प्यार वाली।
अब यहाँ भाती नहीं,
याद क्यूँ जाती नहीं॥

अब समय के साथ,
बह जाना विवशता है।
भोर न आती 'सहन' में,
ये कसक खलती है मन में॥

माँ-पिता का निःस्वार्थ सपना,
मेरी सफलता और खुशियाँ।
अब विगत में लौट पायेंगे नहीं,
पंछी अपने नीड़ जायेंगे नहीं॥



डॉ. अनुराधा जोशी
कनिष्ठ अनुवादक

कर्म का मर्म

कर्म को सामान्यतः किसी के द्वारा किए जाने वाले कार्य अथवा क्रिया के रूप में परिभाषित किया गया है। इसके साथ-साथ यह कहना भी गलत नहीं होगा कि कर्म एक ऐसी अभिव्यक्ति है जो हमारे व्यवहार को दर्शाती है। अभिव्यक्ति ही तो है क्योंकि हमारे कर्म से ही पता चलता है कि हमारा व्यक्तित्व कैसा है। कर्म मात्र स्वयं के क्रियात्मक रूप से कार्य करना नहीं है, वरन् कर्म तो हमारी वाणी से, विचारों से भी झलकता है तथा हमारे निर्देश पर जो कर्म किसी अन्य के द्वारा किया जाए वो भी कुछ अंश तक हमारा कर्म है, क्योंकि कर्म निर्देशात्मक है। वेदों से भी ज्ञात है, अगर आप अच्छा करते हैं तो अच्छा ही पाते हैं, भले ही कुछ परीक्षाओं एवं कठिनाइयों के बाद ही सही और यदि बुरा करते हैं तो बुरा ही परिणाम प्राप्त होता है। कर्म हमारी नियति नहीं है, हमारा भाग्य हमारे कर्मों से निर्मित होता है। कर्म का परिणाम त्वरित भी हो सकता है और एक कालांतर के पश्चात भी। कर्म एक लेखा है, जो संचित होता रहता है और इसके संचय का बौद्धिक आधिपत्य मनुष्य के पास ही है। कर्म पशु भी करते हैं, शिशु भी करते हैं किन्तु पशुओं एवं छोटे बच्चों में सही गलत को पहचानने की क्षमता नहीं होती है। मनुष्य ही एकमात्र ऐसा जीव है जो अपने कर्मों पर नियंत्रण कर सकता है, क्योंकि धर्म शास्त्रों के अनुसार 84 लाख योनियों के जन्म और मरण के बाद मानव जीवन की प्राप्ति होती है। उन्हें जिसमें आनंद मिले, उनके लिए वही सुख है। कर्मों पर नियंत्रण से तात्पर्य अच्छे और बुरे में अंतर पहचानने से है। ईश्वर कर्म करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं, किन्तु उत्तम और अधम को चुनने के लिए मनुष्य स्वतंत्र है। मनुष्य को ईश्वर ने बुद्धि प्रदान की है।

संत तुलसीदास जी ने कहा, "हमारे शरीर के अस्तित्व में आने से बहुत पहले ही हमारी नियति आकार ग्रहण कर लेती है"। इसका कारण हमारे कर्म ही हैं। कर्मों का लेखा अनेक प्रकार का हो सकता है, जैसे: संचित कर्म, प्रारब्ध कर्म तथा क्रियमाण कर्म।

संचित कर्म जो हमारे कुल कर्म हैं। इन कुल कर्मों का लगभग कुछ प्रतिशत हिस्सा अलग निकाल कर रखा जाता है। इस निकाले गए कुछ प्रतिशत का ही फल भोग हम वर्तमान में करते हैं, वे ही हमारे प्रारब्ध हैं। इसके अतिरिक्त, वर्तमान में किए जाने वाले कर्म तथा प्रारब्ध भोगने के उपरान्त जो संचित कर्म शेष हैं, इन सबका योग मिलकर बनता है, क्रियमाण कर्म। यही क्रियमाण कर्म हमारा भाग्य निर्माण करते हैं और सुख-दुःख की उद्भावना करते हैं। हमारे जीवन में आने वाले दुःख के लिए हम अपने भाग्य को या ईश्वर को उत्तरदायी ठहराते हैं। भाग्य का तो फिर भी ठीक है, क्योंकि भाग्य तो हमारे कर्मों से ही उद्भूत है, किन्तु ईश्वर का क्या? ईश्वर ने तो हमें मार्ग दिया है, सही या गलत का चयन करना हमारे हाथ में है। कर्मों का चक्र मात्र एक या दो जन्मों का नहीं है, यह तो जन्म-जन्मान्तर का चक्र है। इस जन्म-जन्मान्तर को उत्तम बनाने के लिए ही मनुष्य को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह अपनी बुद्धि का उपयोग सही दिशा में करे। मन-वचन और कर्म से हमें सभी के प्रति सम्मान का भाव और उदार भाव रखना चाहिए। हमारे प्रति कोई गलत करता है तो वह अपना कर्म करता है, उसके परिणाम की चिंता हमारी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि इसका परिणाम तो उस व्यक्ति ने अपना कर्म करके निर्धारित कर लिया है। मनुष्य व्यर्थ ही अन्य के प्रति ईर्ष्या भाव से घिरा रहता है। प्रत्येक मनुष्य की अपनी जीवन शैली, सुख-दुःख आदि सब उसके अपने कर्मों का परिणाम है और हमारी जीवन दशा हमारे कर्मों का फल, तो फिर व्यर्थ का विचार क्यों? मनुष्य को चाहिए कि वह प्रत्येक स्थिति में अपनी मनोदशा पर नियंत्रण रखे क्योंकि विचारात्मक रूप से भी हम कर्म ही कर रहे हैं। कर्म मनोदशा का दर्पण भी है।

मन से किसी के विषय में ईर्ष्यात्मक विचार रखना, राग-द्वेष रखना या फिर उत्तम भाव रखना, ये सब भी हमारे संचित कर्मों की चेतना ही है। हमारी चेतना ऐसी होनी चाहिए कि कर्मों का विधान करते समय हमारा मन, मस्तिष्क सचेत रहे कि हमारे कर्म से किसी का भी अहित न हो तथा मन, वचन और कर्म में एकरूपता आवश्यक है। करुणा, दया, नैतिकता, परोपकार आदि गुणों को यदि हम अपने व्यवहार में समाहित करें, तो निश्चय ही यह हमारे व्यक्तित्व को सौन्दर्य प्रदान करता है। हमारे कर्म ही लौटकर हमारे पास आते हैं, इसीलिए ध्यान रहे, जैसा हम देंगे, वैसी ही प्राप्ति होगी। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्राप्ति की आकांक्षा को ध्यान में रखकर कर्म किया जाए। कर्म निःस्वार्थ तथा परार्थ भावना से किया जाए तो बेहतर होता है। श्रीमद्भगवद्गीता में श्री कृष्ण ने भी निष्काम कर्मयोग के विषय में ज्ञान दिया है, हम सभी जानते ही हैं। निष्काम कर्मयोग के अनुसार मानव को फल की इच्छा से रहित होकर कर्म करना चाहिए। जहाँ कर्म के परिणाम के प्रति आसक्ति होती है, वहाँ हमें दुःख का सामना भी करना पड़ सकता है। कर्मयोगी कर्म करता रहता है, किन्तु कर्मफल की इच्छा का त्याग करता है। इस कर्मफल की इच्छा का त्याग करते हुए ही वह सभी दुखों से मुक्त होकर, प्रत्येक परिस्थिति में समभाव होकर रहता है। यही समभाव उसे परमात्मा से जोड़ता है। ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति जड़-चेतन की भावना से ऊपर उठकर जीवन की उत्तम गति को प्राप्त करता है।



मेघा कौशिक
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इतिहास गवाह है

कहते हैं इतिहास अपने को दोहराता है। इसका कारण शायद बुद्ध भगवान की दी गयी सीख में मिलता है कि व्यक्ति के जीवन में एक पैटर्न देखने को मिलता है, जिसमें एक तरह की परिस्थिति का उसे बार-बार सामना करना पड़ता है; जैसे कि किसी व्यक्ति को क्रूर या कठोर स्वभाव के अधिकारी या परिवार के मुखिया के साथ व्यवहार-जगत में आदान-प्रदान करना पड़ता है। ऐसा इसलिए भी होता है जिससे उस व्यक्ति का संपूर्ण और संतुलित विकास हो सके। एक अनुशासन प्रिय नेता/अधिकारी किसी व्यक्ति की दिनचर्या और कार्यकलापों को व्यवस्थित करने का मौका प्रदान करता है, अन्यथा वह व्यक्ति दंभी और स्वच्छंद प्रवृत्ति का बन जाता है, जो परिवार और समाज दोनों के लिए घातक है। इतिहास में हमें देखने को मिला है कि प्राचीन काल में बड़े साम्राज्य जैसे गुप्त, चोल, चालुक्य, चंदेल, इत्यादि अपने धार्मिक और प्रशासनिक कृत्यों के कारण शताब्दियों तक राज कर पाए।

मुगलों ने भी जब तक प्रजा की भलाई और प्रजा के मतों को तवज्जो दी तब तक वह लगभग पूर्ण भारत पर राज कर पाए। बाद में मुगल तब कमजोर पड़ गए, जब उनके द्वारा स्वार्थवश अंग्रेजों, पुर्तगालियों तथा फ्रेंच लोगों को व्यापार के बहाने देश में आमंत्रित किया गया और कूटनीति को दरकिनार कर दिया, तब भारत गुलामी की जंजीरों में फंस गया। निजी स्वार्थ तथा आने वाली पीढ़ियों के कल्याण की इच्छा के कारण हमारे देश ने कई जयचंद देखे हैं। इस वजह से हमारे देश को गुलामी झेलनी पड़ी, जो आज के समय के भ्रष्टाचार के समकक्ष है। अगर समय चलते सामाजिक और आर्थिक असमानता व विषमताओं तथा धार्मिक उन्माद पर अंकुश नहीं लगाया गया तो, विश्व के अन्य देशों की तरह तथा हमारे खुद के इतिहास की बानगी देखनी पड़ेगी, जो कि धार्मिक दंगों तथा गृह-युद्ध की स्थिति में भी परिणित हो सकती है। इसलिए इतिहास से सबक लेकर हमें समाज, राजनीति तथा अन्य पक्षों में अनुशासन तथा सेवाभाव को सम्मिलित करना होगा, जिससे हम एक सम्पन्न, खुशहाल तथा समृद्ध विकसित राष्ट्र बन सकें।



वरुण त्यागी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे गर्व है

- **मुझे गर्व है** हाँ! अपने महिला होने पर मुझे गर्व है। मुझे गर्व है कि सुबह सबसे पहले उठकर मैं अपने घर को संवारने कि शुरुआत करती हूँ।
- मुझे गर्व है, अपनी रसोई पर जिसे मेरी पसंद से अधिक मेरे अपनों की पसंद का अधिक ज्ञान है।
- मुझे गर्व है, अपनी सुबह की थकान पर जो कार्यालय पहुँचकर एहसास नहीं होने देती और स्फूर्ति में बदल देती है।
- मुझे गर्व है, अपनी शाम की थकान पर जो घर पहुँचते ही बच्चों के गले लगने पर ओझल हो जाती है।
- मुझे गर्व है, अपनी भूख पर जो तब तक शांत रहती है जब तक मेरे अपने न खा लें।
- मुझे गर्व है, अपने भावुक होने पर, जिसकी वजह से मैं औरों की भावनाएँ समझ पाती हूँ।
- मुझे गर्व है, अपनी खराब तबियत पर जो घर को अस्त-व्यस्त देख कर अपने आप ठीक हो जाती हैं।
- मुझे गर्व है, अपनी आदतों और चाहतों पर जो कभी अपने आप को प्राथमिकता नहीं देती।
- मुझे गर्व है, अपने निःस्वार्थ और निश्चल प्यार पर जो लेने से अधिक देने में विश्वास रखता है।
- मुझे गर्व है, अपने अस्तित्व पर, क्योंकि महिला होने से ही हर घर में हरियाली है, हर पग पर रोशनी है और मेरे होने से ही यह कायनात इतनी खूबसूरत है।



आशीष कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

रफ कॉपी

बचपन में हमारे स्कूल बैग में एक ऐसी कॉपी हुआ करती थी, जो हर विषय को संभालती थी वो 'रफ कॉपी' कहलाती थी। रफ कॉपी का वास्तविक मतलब तो 'खुरदुरा' होता है परन्तु रफ कॉपी हमारे लिए भावनात्मक रूप से बहुत कोमल होती थी। रफ कॉपी की कीमत अन्य कॉपियों की तुलना में मौद्रिक रूप से कम होती थी, परन्तु वह अपने आखिरी पड़ाव में आते-आते हमारे लिए बेशकीमती हो जाती थी, जिसकी अन्य कॉपियों से तुलना भी शायद बेईमानी हो।

कुछ महीने पहले मैं अपने गाँव गया था, जहाँ सफाई के दौरान एक कोने में मुझे मेरी आठवीं कक्षा की रफ कॉपी मिली। जब मैंने उस रफ कॉपी के पन्ने पलटने शुरू किए तो उस कॉपी का एक-एक पन्ना मुझे रोमांचित कर रहा था। मुझे ऐसी अनुभूति हो रही थी कि मैं अगर संग्रहालय में रखवा दूँ तो 'सम्राट अशोक के शिलालेख' की भाँति उस रफ कॉपी को प्रसिद्धि मिल जाए। उस रफ कॉपी के पन्नों पर कहीं घसीट कर तो कहीं करीने से वाक्य लिखे थे। विभिन्न प्रकार एवं आकृतियों की मदद से लिखा गया अपना नाम, बीच-बीच में बने फूल-पत्ती, रविवार को खेले जाने वाले क्रिकेट टीम की संरचना, भारतीय क्रिकेट टीम के मैचों के लिए अपने पसंदीदा खिलाड़ियों से बनाई गई टीम का संयोजन, अपने पसंदीदा फिल्म सितारों के नाम, कुछ पसंदीदा फिल्मों के नाम, पसंदीदा गानों की कुछ पंक्तियाँ इत्यादि को देखकर उन दिनों की खूबसूरत यादें ताजा हो गई थी।

बचपन में पढ़ाई हेतु रफ कॉपी की महत्वपूर्ण भूमिका होती थी परन्तु यह भी सत्य है कि इसके रख-रखाव में कोई प्रतिबन्ध नहीं होता था, ना ही इसमें इंडेक्स बनाने की ज़रूरत होती थी और ना ही इसे सुन्दर और साफ़ रखने की आवश्यकता। उस कॉपी के पहले पन्ने पर तो हमारा नाम होता था और आखिरी पन्नों पर अजीब सी कलाकृतियाँ, राजा-मंत्री-चोर-सिपाही का स्कोर कार्ड, क्रिकेट का स्कोर इत्यादि। उस रफ कॉपी में बहुत सी यादें होती थीं, जैसे अनकहा प्रेम, अनजाना सा गुस्सा, उदासी, दर्द, कुछ बनती-बिगड़ती कविताएँ और रेखाचित्र। कुछ कोड वर्ड तो ऐसे होते थे जिसे सीबीआई, सीआईडी, और फोरेंसिक वाले भी डिकोड नहीं कर सकते थे। अगर पन्ने फाड़ने की ज़रूरत होती थी तो हम 'रफ-कॉपी' के ही पन्ने फाड़ा करते थे। हम अपने स्कूल बैग में कुछ भी रखना भूल सकते थे, लेकिन रफ कॉपी रखना नहीं भूलते थे। अब हमारे जीवन में वो 'रफ कॉपी' वाला हिस्सा गायब हो गया है, इसलिए बहुत दिनों से ना ही प्रेम का हिसाब हुआ है और ना ही गुस्से का, ना उदासी का और ना ही दर्द का। अब कलम उठती भी है, तो सिर्फ हस्ताक्षर करने के लिए।



मेघा कौशिक
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

प्रकृति या विकास

हमारे प्राचीन ग्रंथों में कहा गया है कि प्रकृति, जीव व ईश्वर इन तीन शक्तियों से हमारा संसार बना। प्राचीन काल में मनुष्य शिकार करके या फल-फूल इकट्ठे कर अपना और अपने परिवार का पालन-पोषण करता था, इस कारण से मनुष्य, जीव-जंतुओं और प्रकृति का सामंजस्य बना रहता था। बीमार होने पर मनुष्य खाना छोड़कर या प्राकृतिक जड़ी-बूटियों का उपयोग करके स्वस्थ हो जाता था। धीरे-धीरे जंगल काटकर लोगों ने कृषि करनी शुरू कर दी। आबादी बढ़ने के साथ-साथ प्रकृति का दोहन चरम सीमा पर होना शुरू हो गया। रामायण काल से लेकर हड़प्पा सभ्यता और आज के आधुनिक युग तक प्राकृतिक परिवेश का पूर्णतः रूपांतरण हो चुका है। अब प्रकृति गमलों में पौधों तथा फार्महाउस कल्चर में परिणित हो गयी है। प्रदूषण इतने स्तर पर है कि साँस लेना दूभर हो जाता है। यूक्रेन और रूस के युद्ध से वैश्विक स्तर पर वायु प्रदूषण अपनी चरम सीमा पर पहुँच गया है। ग्लोबल-वार्मिंग से वैश्विक तापमान में बढ़ोतरी हुयी है, जिससे जंगल तक जलकर खाक हो जाते हैं। विश्व का ऑक्सीजन भंडार कहे जाने वाले अमेज़न के जंगलों में आग लगने से वायु प्रदूषण वैश्विक तौर पर बढ़ गया।

हम अपने स्तर पर बिजली का कम इस्तेमाल करें। सब्जियों और फलों में से निकलने वाले बीजों को बचाकर हम गमलों और खुले स्थानों पर फेंक सकते हैं। यही बीज कचरे में जाकर बर्बाद हो उससे बेहतर इनसे हरियाली फैलाई जा सकती है। प्रकृति के बचाव से ही विकास हो सकता है। अंधाधुंध जंगल काटकर सड़क बनाना विकास की दृष्टि से सही लगता है, परन्तु टिहरी बाँध के विस्थापित लोगों, जोशीमठ के पहाड़ में बसने वाले लोगो, विलुप्त होती प्रजातियों तथा आदिवासी समाज के प्रस्थापन से विकास का वीभत्स चेहरा दिखता है। अभी हमें लगता है कि यह सब हमारे साथ नहीं हो रहा तो हमें कोई फर्क नहीं पड़ता, परन्तु यह सब पर्यावरण विरोधी कार्यों से वायु-प्रदूषण, जल-प्रदूषण, ध्वनि-प्रदूषण बढ़ रहा है, जिसका प्रभाव हमारे परिवार के स्वास्थ्य पर सीधा पड़ता है। अगर सभी व्यक्ति अपने हर कर्तव्य को पर्यावरण की दृष्टि से देखकर करेंगे, तो हम अपनी आने वाली पीढ़ियों के लिए एक स्वस्थ समाज और प्रकृति छोड़ जायेंगे।



गुंजन जाजोरिया
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

बिटिया



चंचल, नटखट, लाड़-लड़ाती,

ऐसी प्यारी है एक गुड़िया,
सबके मन को है यह भाती,
ऐसी न्यारी मेरी बिटिया,

सुबह उठे तो लगे किरण सी,
धूप की पहली, मेरी मुनिया,
लहराती दौड़े आँगन में,
इक ठंडा झोंका है बिटिया,

नन्हें कोमल हाथों से यह,
छुए तो लगे रंगी दुनिया,
बाँहों में भर कर यह अपनी,
दुःख हर ले सबका ये बिटिया,

तुतलाती सी बोले प्यारा,
शहद सी मीठी, चहकती चिड़िया,
दादू, नानू, चाचू, मामू,
सबकी दुलारी मेरी बिटिया,

चमकीली आँखों से अपनी,
मन मोह ले, जादू की पुड़िया,
कानों में मिश्री सी घोले,
हंसती है जब मेरी बिटिया,

ईश्वर की देन ये बेटियाँ,
लक्ष्मी का रूप हैं ये बेटियाँ,
हैं घर उनका स्वर्ग से सुन्दर,
जिन घर में आए बिटिया।



गीतिका चुघ
पर्यवेक्षक

प्रकृति का अनमोल उपहार - योग

जीवनभर प्रकृति से जुड़े रहने के लिए, प्राचीन काल ने योग, मानव जाति को एक उपहार

दिया। योग वृक्ष, पुष्प, जानवर आदि से प्रेरित आसन है। योग आध्यात्मिक व्यायाम का एक प्राचीन रूप है जो हमारे शरीर और मस्तिष्क को बेहतर करता है। योग की उत्पत्ति 500 ई.पू. की है जब इसे हिन्दुओं के ग्रन्थ 'ऋग्वेद' में लिखा गया था। योग द्वारा शरीर और मन को अनुशासित किया जा सकता है। यह व्यायाम का अद्भुत रूप है, जो स्वस्थ और लम्बा जीवन जीने में मदद करता है क्योंकि आसन या योगासनों के अभ्यास में सांसों की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण होती है।

महर्षि पतंजलि को आधुनिक योग के पिता के रूप में जाना जाता है। उन्होंने सभी पहलुओं को एक निश्चित प्रारूप में आत्मसात किया और योग सूत्र में शामिल किया। प्राचीन भारतीय शास्त्रों में कुल 84 आसन हैं, जो हमें विभिन्न मुद्राओं के बारे में बताते हैं। ग्रंथों में विभिन्न प्रकार के योग हैं जैसे राजयोग, ज्ञानयोग, भक्तियोग, कर्मयोग व हठयोग।

12 जून 2023 को अधिसूचना द्वारा 'मोरारजी देसाई राष्ट्रीय योग संस्थान और आयूष मंत्रालय' ने केंद्रीय कर्मचारियों के लिए आदेश जारी करते हुए कहा है कि वे तनाव को कम करने और रीफ्रेश रहने के लिए 'वाई-ब्रेक' अर्थात् योग-विराम लें। सरकार ने इस योग-विराम को 'वाई-ब्रेक' का नाम दिया है व कहा गया है कि कर्मचारी अपनी कुर्सी पर ही योग कर सकते हैं तथा आसन, प्राणायाम आदि की मदद से खुद को स्वस्थ रख सकते हैं। केंद्र सरकार ने सभी मंत्रालयों को इस नये योग ब्रेक प्रोटोकॉल को अपनाने के लिए कहा है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस प्रतिवर्ष 21 जून को मनाया जाता है। 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र के 177 सदस्यों द्वारा 21 जून को 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' मनाने की मंजूरी मिली। प्रत्येक व्यक्ति योग विशेषज्ञ से विचारामर्श कर योगाभ्यास आरंभ कर सकता है व योग का परिणाम एक सप्ताह में दिखना शुरू हो जाता है। योग अभ्यास के लोगो (logo) में दोनों हाथों को मोड़ना, योग(मिलान) का प्रतीक है, जो मन और शरीर, मनुष्य और प्रकृति के बीच मिलन का भी प्रतीक है। योग के मुख्य लक्ष्य हैं: शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक स्वास्थ्य और सामाजिक स्वास्थ्य। अतः आपके अपने स्वास्थ्य और कल्याण के बारे में निर्णय आपके ही हाथों में है। दृढ़ निश्चय के साथ नियमित रूप से अभ्यास करें, सफलता निश्चय आपकी ही होगी।



राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षक अधिकारी

जिंदगी बस यही है!

क्या लेकर आए थे, क्या लेकर जाना है।
सीखना है तभी, ठोकर जब खाना है।
थोड़ी सी खुशी के पीछे, गमों का खजाना है।
कुछ खुशी के पल, तो कुछ गुज़रा अफ़साना है।
ज़िन्दगी बस यही है, जीते चले जाना है॥

ज़िन्दगी के ख़वाब हजारों, आँखों में सजाना है।
कुछ होते पूरे, बाकी टूट ही जाना है।
अपनों का साथ एक दिन, छूट ही जाना है।
खुश रहो उन्हीं में, हासिल जो याराना है।
ज़िन्दगी बस यही है, जीते चले जाना है॥

क्या है वो, दुनिया को बताना है।
विफलता से खुशी, सफलता से जलता जमाना है।
थोड़ी सी प्रशंसा, फिर डांट बहुत खाना है।
चार दिन की ज़िन्दगी, फिर काहे का इतराना है।
ज़िन्दगी बस यही है, जीते चले जाना है॥

गुमान सा तनिक दिन छूट ही जाना है।
दुनिया से नाता, तब छूट ही जाना है।
जो प्राप्त है, पर्याप्त है, अब और क्या पाना है।
खाली हाथ आए थे, खाली हाथ जाना है।
ज़िन्दगी बस यही है, जीते चले जाना है॥



अन्नू बाजपेयी
कनिष्ठ अनुवादक

भारतीय परिदृश्य में महिलाओं का भाषागत सशक्तीकरण

“ अहम् रुद्रे भिर्व सुभिश्चराम्यहम् आदित्येरुत विश्वदेवैः” (ऋग्वेद 10/125/01)

ब्रह्मवादिनी वाक् द्वारा दर्शित उपरोक्त मंत्र में देवी वाक् स्वयम् कहती हैं कि वाक् (वाणी/भाषा) रुद्रों, वसुओं, आदित्यों तथा विश्वदेवों के साथ विचरण करती हैं अर्थात् ये वाक् ही है जो संसार को देदीप्यमान किये है। फिर जब विवेकानंद जी कहते हैं कि “किसी पक्षी के लिए एक पंख से उड़ना असंभव है” तो अनायास ही इसका सम्बन्ध किसी राष्ट्र के उन तमाम विकासगत पहलुओं की ओर जाता है, जिनसे महिलाओं का सीधा सम्बन्ध है, फिर भाषा इससे अछूती कैसे रह सकती है? या कुछ यूँ कहें कि जब भारतेन्दु जी ने ‘निज भाषा उन्नति को सभी उन्नतियों का मूल’ बताया था तो क्या इस उन्नति में ‘महिला’ सहभागिता अपेक्षित नहीं थी?

इतिहास की उथली ज़मीन पर कुछ हल्के पग रखने पर पता चलता है कि घोषा, अपाला, लोपामुद्रा, विश्वारा, इन्द्राणी आदि कितनी ही विदुषियों के नाम मिलते हैं जिनके वेदों में दर्शन हैं। देवी वाक् द्वारा ऋग्वेद के ‘देवीसूक्तम्’ के आठ महत्वपूर्ण मन्त्रों की रचना हो या ‘गार्गी’ द्वारा ‘याज्ञवल्क्य’ को शास्त्रार्थ में पराजित करना, यह उद्घोषित करने के लिए पर्याप्त है कि ‘हम’ प्रारंभ से ही इस भाषारूपी ‘युद्धक्षेत्र’ में विजय के क्षम थे।

हालांकि मध्य-काल तक आते-आते यह वैचारिक-प्रवाह मंद हो गया। सामाजिक-धार्मिक चारदीवारें समय के साथ मज़बूत क्या हुईं, मानो लेखनी के साथ महिलाओं का अपनापन भी उल्का होता चला गया। इसी का प्रमाण है कि ‘गंगा, सुमति, शोभा, देवकी’ आदि ऐसी अनेकानेक कवयित्री हुईं जिनकी रचनाएँ न जाने किन दुरूह अगमों की आड़ में समा गयी कि आजतक स्वयं का प्रतिबिम्ब भी न बना पायीं और कवि ‘गिरधर’ की पत्नी ‘साई’ कवयित्री होते हुए भी अपनी रचनाओं के अंत में ‘गिरधर कविराय’ लगाना न भूलीं - “कह गिरधर कविराय जगत यह लेखा भाई”

बिन बेगरजी प्रीति, यार बिरला कोई साई”

बावजूद इसके व्याकरणिक दुरुहताओं, शुद्धतावादी नजरियों व अवधारणाओं से दम छुड़ाती हुई भाषा जीवनानुभवों पर आके ही आराम पाती है और इसका शंखनाद अथक स्वरों में 'मीराबाई' करती नजर आती हैं।

“मोहनि मूर्ति सांवरि सूरत, नैना बने विसाल”

फिर चाहे राजस्थानी हो या हिंदी, जिस स्तर पर जाकर उनके द्वारा भाषा को भक्ति के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाया गया है, वह निश्चित ही उन्हें भाषाविदों की अग्रिम पंक्ति में खड़ा करता है। अग्रतर महिलाओं ने स्वयं से ही समाज की इन बुराइयों को भाषा के अस्त्र से काटने का प्रयत्न किया जिनमें महादेवी वर्मा, सुभद्रा चौहान, चित्रा मुद्गल, ममता कालिया, मन्नू भंडारी (हाँ !!! अभी कल ही तो मैंने 'आपका बंटी' समाप्त किया है और उन दिनों में कितने ही बार मेरी आँखें नम हुईं, इसलिए नहीं कि विषय मार्मिक था, इसलिए कि बंटी की भाषारूपी 'बड़ी वाली गन' से निकली 'ठांय.....' की आवाज ने हर बार हृदय के अंतिम छोर तक आघात किया) जैसे कितने ही नाम हैं, जिन्होंने भाषा के चयन में प्राचीन विदुषियों का सा साहस दिखाने का प्रयत्न किया।

जिस प्रकार महादेवी जी अपने काव्य में भाषा के माध्यम से भावुकता, स्निग्धता, भाव-उद्देरकयुक्त प्रतीक्षा और लोक मंगल की भावना समाहित करती हैं, निराला जी के अनुसार वह 'हिंदी के विशाल मंदिर की सरस्वती हैं'

**‘अलि कैसे उनको पाऊँ? वे आंसू बनकर मेरे ,
इस करण ढुल-ढुल जाते, इन पलकों के बंधन में
मैं बांध-बांध पछताऊँ।’**

ध्यान देने की बात है कि पन्त, निराला, दिनकर के मध्य खड़ी-बोली को सुकोमल मार्मिकता देने का श्रेय महादेवी जी को ही जाता है : 'रूपसि तेरा-घन-केश-पाश

**श्यामल-श्यामल कोमल-कोमल
लहराता सुरभित केश-पाश'**

देशज, विदेशज, तद्भव, तत्सम, संस्कृत सभी शब्दों का सहज प्रयोग, 'जन्म से अभिशप्त एवं जीवन से संतप्त नारी' का 'शृंखला की कड़ियाँ' में चित्रण, "चाँद" पत्रिका के 'विदुषी' अंक में स्त्री-मुक्ति और बाल-विधवाओं के नारकीय जीवन पर आघात, शब्दों के माध्यम से ही संभव था।

सावित्रीबाई फूले, पंडिता रमाबाई, सरोजिनी नायडू, सरला देवी चौधरानी जैसे अन्य अनेक नाम हैं जिन्होंने अपनी कलम से भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अविस्मरणीय योगदान दिया।

अनगिनत बार 'चमक उठी सन् सत्तावन में वह तलवार पुरानी थी' के साथ मन का आवेशित होना और 'रानी एक शत्रु बहुतेरे, होने लगे वार पर वार; घायल होकर गिरी सिंहिनी उसे वीरगति पानी थी' तक आते-आते मन का विह्वल होना, बिना सशक्त भाषा के संभव न था। ज़ाहिर है, भारतीय इतिहास में महिलाओं ने भाषा के हर स्वरूप में स्वयं को 'निःस्वार्थ' भाव से बखूबी ढाला है, जो वर्तमान में भी अनवरत जारी है। भारत के सीएजी के राजभाषा विभाग में कमोबेश 35 प्रतिशत महिला कार्मिकों का होना उत्साहवर्धक है और उत्तरोत्तर वर्षों में महिलाओं का इस क्षेत्र में बढ़ता रुझान सकारात्मक सन्देश देता है। गाँधी जी के विचार में महिलाएं सदैव ही बेहतर अग्रता रहीं हैं और ऐसे में यदि भारत ने औपनिवेशिक मानसिकता को मूल से हटाने का प्रण (पंचप्रण) लिया है तो यह आवश्यक हो जाता है की पहले-पहल भारत की भाषाओं को ही अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर मज़बूती प्रदान की जाये तो इसमें महिलाओं की महती भूमिका अपरिहार्य हो जाती है।



सुप्रिया सिंह
कनिष्ठ अनुवादक

जीवन एक यात्रा



जीवन एक यात्रा है, यह कह देना कुछ गलत नहीं होगा क्योंकि हम सब अपने जीवन में कई रास्तों से होकर गुज़रते हैं, जीवन की यात्रा में अनेक मोड़ आते हैं, जो हमें कई अच्छे-बुरे अनुभव दे कर जाते हैं। उनमें कुछ यादों को तो हम सहेजकर मन की गुल्लक में रखते हैं, लेकिन कुछ को मन के किसी कोने में दबा लेते हैं। कहा जाता है कि 'जीवन को इतनी गंभीरता से मत लो' सच ही तो है, जो समय निश्चित ही नहीं है, जिसके हम निर्माता नहीं हैं, जिसकी डोर हमारे हाथ नहीं हैं उसे हम कैसे थाम सकते हैं; जो है, उसे ही खुशी से उत्साहित होकर जिया जाए तो बेहतर होगा। अति-गंभीर होकर हम कभी भी किसी चीज़ का मज़ा नहीं ले पायेंगे।

आनंद फ़िल्म का वह गीत "ज़िंदगी कैसी है पहेली हाय! कभी तो हँसाए कभी ये रुलाये" हमारे जीवन की बेहतरीन व्याख्या करता है, इस जीवन की यात्रा में हम हँसते-गाते चलें तो जीने का मज़ा आएगा ठीक उसी तरह जैसे गोल-गप्पे के चटपटे फलेवर का मज़ा है, जीवन में जितनी भी कोशिश करो, कुछ न कुछ तो छूटेगा ही इसलिए यहीं इसी पल का मज़ा लेते हैं और इस जीवन की यात्रा में खट्टे-मीठे पल जीते चले जाते हैं। हमें कोशिश करनी चाहिए कि हम सिर्फ सुकून ढूँढ़ें, ज़रूरतें कभी पूरी नहीं होती, जीवन को हँसकर जीना ही उसकी कला है।

सारांशतः "जीवन के प्रत्येक चरण का आनंद लेना चाहिए और किसी भी मुश्किल से डरने की जगह हमें उसे पार करने का उद्देश्य रखना चाहिए।" मिट्टी के दीपक की भाँति है हमारा जीवन भीतेल ख़त्म....खेल ख़त्म...।



अंकित शर्मा
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

आज़ादी प्यारी

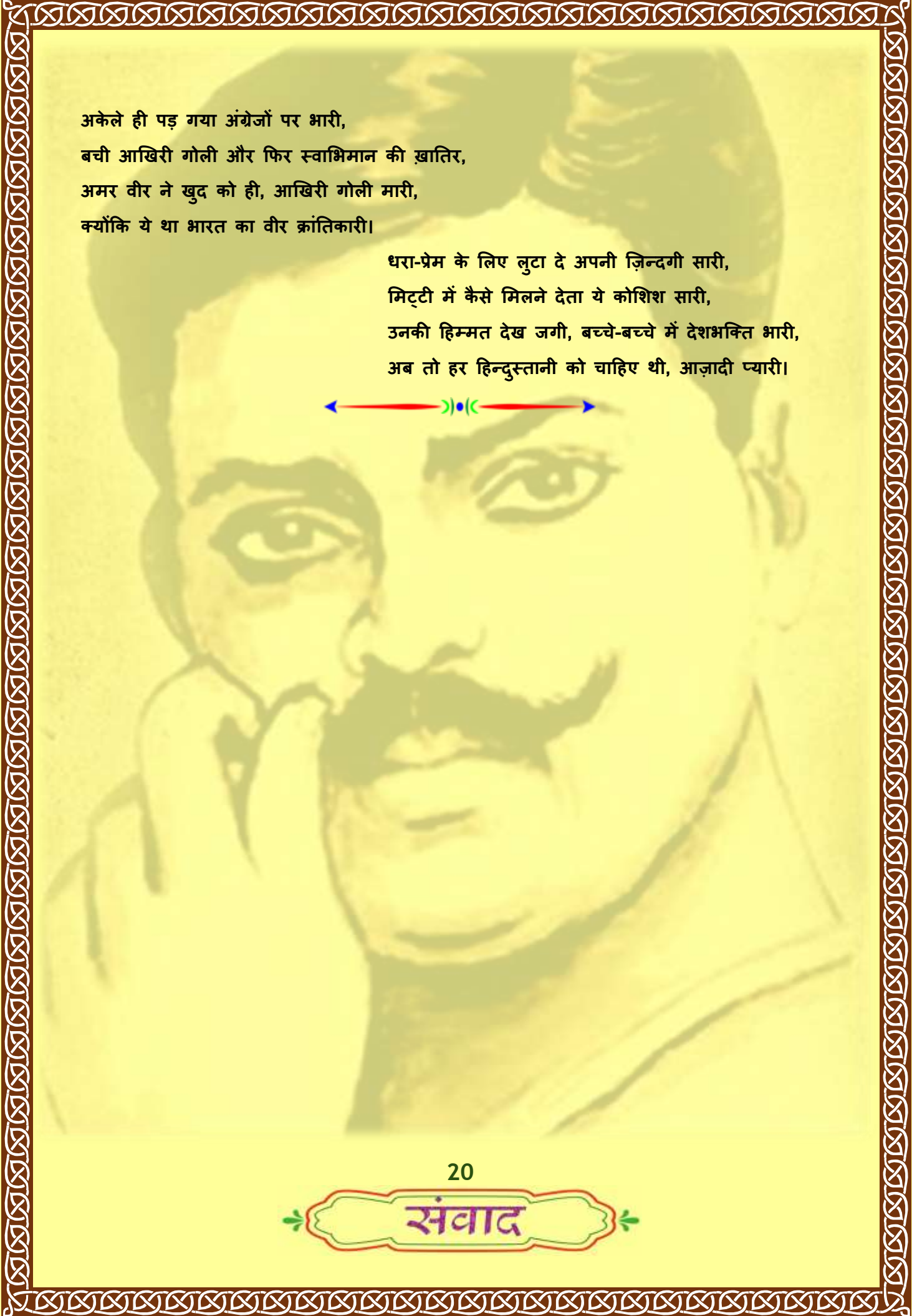


आओ सुनाऊँ प्रेम की एक कहानी,
एक था लड़का चंद्रशेखर तिवारी,
एक थी लड़की आज़ादी, बड़ी प्यारी,
जोड़ लिया आज़ाद नाम में ऐसी चढ़ी खुमारी।

इस प्रेम को पाने के लिए कोशिश हुई भारी,
पर आसानी से हाथ न आने वाली थी ये आज़ादी प्यारी,
हर एक कहानी की है एक नई कहानी,
होना चाहिए एक खलनायक अनाड़ी।

इस बार यह भूमिका निभाने की अंग्रेजों की थी बारी,
इस रिश्ते को पक्का करने के लिए, की गई अंग्रेजों से बात सारी,
पर अंग्रेजों को नहीं देनी थी आज़ादी प्यारी,
बस फिर ये तिवारी, बन गया भारत का क्रांतिकारी।

आज़ादी को पाना बन गया जुनून भारी,
फिर क्या पूरी अंग्रेज़ी हुकूमत की नींव हिला डाली,
फिर वही पुरानी कहानी,
एक बार फिर धोखे से जाल में फंसने की थी, क्रांतिकारी की बारी।



अकेले ही पड़ गया अंग्रेजों पर भारी,
बची आखिरी गोली और फिर स्वाभिमान की खातिर,
अमर वीर ने खुद को ही, आखिरी गोली मारी,
क्योंकि ये था भारत का वीर क्रांतिकारी।

धरा-प्रेम के लिए लुटा दे अपनी ज़िन्दगी सारी,
मिट्टी में कैसे मिलने देता ये कोशिश सारी,
उनकी हिम्मत देख जगी, बच्चे-बच्चे में देशभक्ति भारी,
अब तो हर हिन्दुस्तानी को चाहिए थी, आज़ादी प्यारी।





राजेश कुमार सिंह
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समय की कीमत

समय इस संसार में अन्य सभी वस्तुओं से अधिक शक्तिशाली एवं मूल्यवान है। समय सभी के लिए निःशुल्क तथा समान रूप से उपलब्ध है। समय को अपनी उपेक्षा पसंद नहीं है, क्योंकि इसका प्रभाव अनेक परिस्थितियों में विपरीत हो जाता है। समय का सदुपयोग ही इसकी वास्तविक पहचान है। समय किसी का इंतज़ार नहीं करता, यह निरंतर चलता रहता है। इस संसार में सब कुछ समय पर निर्भर करता है, चाहे वो ब्रह्मांड में स्थित विशाल खगोलीय पिंड का अध्ययन हो या फिर पृथ्वी पर पाए जाने वाले लाखों सजीव-निर्जीव वस्तुओं की परिकल्पना। समय से पहले कुछ नहीं होता और न ही समय के बाद कुछ होता है, यह एक समय पर केवल एक ही अवसर देता है। इसलिए हर व्यक्ति को चाहिए की वह समय का सही प्रयोग करे।

समय हमारी सफलता का आधार होता है जो सही उपयोग का प्रतीक है। यदि हम सही समय पर सही फैसले नहीं लेंगे या समय के साथ कदम मिलाकर नहीं चलेंगे तो दूसरों से पीछे रह जायेंगे और हमारे सपने, सपने ही रह जायेंगे। प्रत्येक इंसान का जीवन में कोई न कोई लक्ष्य ज़रूर होता है। लक्ष्य प्राप्ति के लिए हमें जीवन में समय के महत्व को समझना होगा और प्रत्येक कार्य सही समय पर करने की आदत डालनी होगी, तभी हम अपने जीवन के लक्ष्य को हासिल कर पायेंगे। इसलिए हमें कीमती समय को व्यर्थ नहीं जाने देना चाहिए।

यदि हम समय के महत्व और संकेत को समझने में देर करते हैं, तो हम अपने जीवन से सुनहरा अवसर और महत्वपूर्ण अवसर खो देंगे। हमें कभी भी जीवन के अवसर को अनावश्यक समझ कर खोना नहीं चाहिए। हमें समय का सदुपयोग करने के उद्देश्य से सभी कार्यों को सही समय पर करने के लिए समय सारणी बनानी चाहिए तथा सकारात्मक तथा लाभकारी रूप से समय का सदुपयोग करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ना चाहिए। यदि उचित समय पर कार्य को सम्पन्न न किया जाए तो उस कार्य की सफलता संदेहपूर्ण होती है। जो व्यक्ति समय को

बर्बाद करता है, वह खुद अपने जीवन को अपने हाथों से बर्बाद कर देता है। दुनिया के सारे सफल लोगों ने दूसरों की तुलना में अपने समय का ज़्यादा सदुपयोग किया इसलिए वे दूसरों से आगे निकल पाए। समय अपनी गति से चलता है, न तो वह किसी की प्रतीक्षा करता है, न ही किसी के लिए अपनी चाल को तेज़ या धीमी करता है और न ही किसी के रोकने से रुकता है। समय का महत्व समझने वाला व्यक्ति अपनी बुद्धि और क्षमता के अनुसार समय का सही उपयोग करता है।

हमारे समाज में कुछ-कुछ ऐसे भी इंसान होते हैं, जोकि अपने जीवन में हुई विफलता या हानि के लिए समय को ही दोषी मानते हैं। उन्हें लगता है की उनका समय ही ख़राब है और फिर अपने समय को सही करने के लिए न जाने कितने हथकंडे अपनाने लगते हैं। हमें अक्सर कहीं न कहीं, किसी न किसी से ये सुनने को मिल ही जाता है कि, क्या करें समय ही ख़राब है। वास्तव में इस प्रकार के इंसान समय के साथ कदम से कदम मिलाकर नहीं चल पाते हैं और अपने जीवन में काफी पीछे रह जाते हैं। अफ़सोस की बात तो यह है कि, समय इतना मूल्यवान है फिर भी लोग इसके महत्व को पूरी ज़िन्दगी नहीं समझ पाते हैं और जब ज़िन्दगी के अंतिम पड़ाव में होते हैं, तो इसी समय की कमी का रोना रोते हैं। जो लोग समय को महत्व नहीं देते उनके पास अंत में पछतावे के अलावा कुछ नहीं होता है।

अतः हमें हमारी दिनचर्या को योजना अनुसार और समय के अनुसार व्यवस्थित करना चाहिए। हमें अपना काम सही समय पर करना चाहिए। हमें समय के महत्व को समझना चाहिए और इसी के अनुसार ढंग से इसका प्रयोग करना चाहिए ताकि हम अपने जीवन में सफल हो सकें।



अमित कुमार
लेखापरीक्षक

तारीफ का पुतला

नंदपुर राज्य में एक बहुत ही सज्जन ब्राह्मण निवास करता था, जिसका नाम रामदास था। उसने गुरुकुल से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात किसी उचित नौकरी की तलाश की लेकिन इसके बावजूद वह अपने परिवार के निर्वाह के लिये एक अच्छी नौकरी करने में असफल रहा। उसका विवाह होने एवं पुत्र प्राप्ति के उपरांत भी वह छोटे-मोटे कार्य कर, परिवार का गुज़र-बसर करता था। रामदास को एक पुत्र की प्राप्ति हुई, उसने अपने पुत्र का नाम निर्मल रखा। निर्मल बाल्यकाल से ही बहुत मेधावी था एवं लगन से कार्य करता था। रामदास ने अपने पुत्र को अच्छी शिक्षा प्रदान की। अंततः रामदास के एक ब्राह्मण सम्बन्धी की सिफारिश पर उसकी नौकरी नंदपुर राज्य के राजा हेमराज के यहाँ लग गयी। वह प्रतिदिन राजा के दरबार में जाता था एवं राजा की ओर से उसे एक स्वर्ण मुद्रा प्रतिदिन मिल जाती थी। इसी मुद्रा से रामदास, उसकी पत्नी एवं उसके पुत्र निर्मल का गुज़ारा हो जाता था।

एक दिन रामदास की ससुराल से उसके साले की शादी का निमंत्रण आया, जिसमें उसका जाना अत्यन्त आवश्यक था। रामदास का राजा के यहाँ पर जाना भी जरूरी था इसलिए उसने अपने पुत्र को बुलाया और उससे कहा कि वह राजा के यहाँ पर वह चला जाये और उसके कहे अनुसार कार्य करे। रामदास ने उसे बताया कि “राजा हेमराज को उसकी प्रशंसा सुनना बहुत पसंद है। राजा ने देवी की पूजा करके सिद्धि प्राप्त की है। राजा प्रतिदिन 100 ब्राह्मणों को बुलाते हैं और पूजा करने के बाद सभी ब्राह्मणों के सामने एक छोटे से जग में प्रवेश करके जग की टोंटी से बाहर निकलते हैं। बाहर निकलने पर राजा सभी से पूछते हैं कि क्या कोई ऐसा कर सकता है? सभी ब्राह्मण जानते हैं कि यदि वे राजा की प्रशंसा नहीं करेंगे तो वे दंड के भागी होंगे इसलिए सभी ब्राह्मण एक स्वर में राजा की प्रशंसा करते हैं एवं राजा को कहते हैं कि राजा जैसा कोई नहीं। प्रसन्न होकर राजा सभी को एक-एक स्वर्ण-मुद्रा दे देते हैं। मुझे भी एक स्वर्ण-मुद्रा मिल जाती है, जिससे अपने घर का गुज़ारा चलता है। राजा अपनी तारीफ किये जाने के प्रति इतने आसक्त हैं कि एक बार उनकी पत्नी ने मज़ाक में राजा को आलसी एवं बदसूरत कह दिया था तो उसने अपनी पत्नी को कारागार में डाल दिया। राजा के चारों ओर केवल झूठी तारीफ करने वाले लोग हैं। राज्य में ऐसा राजा होने से धीरे-धीरे प्रजा में भी अशांति फैल रही है।

राजा को तारीफ़ के अलावा कुछ सूझता नहीं है। पता नहीं कौन सा दिन आयेगा जब मैं ब्राह्मण होने के नाते राजा को ये बता सकूँगा कि वह गलत है।”

पुत्र निर्मल, जैसा कि तुम जानते हो कि आज मैं निमंत्रण में जा रहा हूँ, इसलिये आज मेरे स्थान पर तुम राजा के यहाँ जाना एवं उसकी प्रशंसा करना। राजा तुम्हें एक स्वर्ण मुद्रा देगा जिसे लेकर घर आ जाना, इस के अतिरिक्त कुछ अन्य गतिविधि न करना। शाम तक मैं आ जाऊँगा। पुत्र निर्मल को समझाकर रामदास अपनी सुसराल के लिये चला गया।

उस दिन अपने पिता के स्थान पर निर्मल, राजा हेमराज के दरबार में गया। राजा अपनी सिद्धि की सहायता से एक छोटे से जग में प्रवेश करके जग की टोंटी से बाहर निकला। राजा ने अपनी प्रशंसा करने के लिए सेवकों का दल पहले ही नियुक्त किया हुआ था। इस सब के बावजूद राजा ने ब्राह्मणों से अपने बारे में राय पूछी क्योंकि ब्राह्मण अपनी राय शास्त्रों के अनुसार देते हैं एवं उन्हें उचित-अनुचित का ज्ञान भी होता है, किन्तु नंदपुर राज्य में ब्राह्मणों की आय का कोई अन्य स्रोत न होने के कारण अपने परिवारों के भरण-पोषण के लिये उन्हें राजा की झूठी प्रशंसा करनी पड़ी। ब्राह्मणों ने एक स्वर में राजा की बहुत प्रशंसा की। निर्मल को यह सब देखकर बहुत दुःख हुआ। उसने सोचा कि अपने राज्य के एक जिम्मेदार नागरिक होने एवं ब्राह्मण होने के कारण उसका कर्तव्य है कि वह राजा को सही गलत के बारे में बताएँ, जिससे राजा उचित निर्णय लेकर प्रजा के हित के लिये कार्य कर सके। इसलिए उसने राजा से कहा, “राजन, आप एकमात्र व्यक्ति नहीं हैं जो ऐसा चमत्कार कर सकते हैं, इस संसार में ऐसे बहुत सारे लोग हैं जो आप से बढ़कर चीजें कर सकते हैं, आप को इस तरह केवल अपनी तारीफ सुनने के लिए अपनी सिद्धि का प्रयोग नहीं करना चाहिए। राजन आपका प्रत्येक कार्य केवल आपकी प्रजा की संतुष्टि एवं उसकी खुशहाली के लिए होना चाहिए। आप यह सब कार्य बंद कर दीजिये और वही कार्य कीजिये जिसमें जनहित हो।” पहली बार किसी ने राजा के सामने राजा की इच्छा के विरुद्ध बोलने की हिमाकत की थी। राजा को यह सब बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा, वह तुरंत क्रोध से आगबबूला हो गया। उसने क्रोध में निर्मल को कहा, “दुष्ट ब्राह्मण तुम्हारी मुझ पर यह आरोप लगाने की हिम्मत कैसे हुई, मैं अपने सभी कार्यों को ब्राह्मणों एवं अपने मंत्रियों की सलाह से ही करता हूँ। ये सब ब्राह्मण यहाँ प्रतिदिन केवल मेरा मार्गदर्शन करने के लिए ही एकत्र होते हैं, मैं इन सब ब्राह्मणों का सम्मान करने के लिए प्रत्येक को एक-एक स्वर्ण मुद्रा देता हूँ। मैं ब्राह्मणों का इतना सम्मान करता हूँ फिर भी तुम मुझ पर आरोप लगा रहे हो। तुम जैसे धूर्त को मेरे राज्य में रहने का कोई अधिकार नहीं है। तुम कह रहे हो कि मुझ से बेहतर अन्य लोग हैं तो इस बात को साबित करो, यदि तुम कल सुबह तक ये साबित नहीं कर पाये तो भयंकर सजा के लिये तैयार रहना।” इतना कह कर राजा हेमराज गुस्से में पैर पटकता हुआ वहाँ से चला गया।

निर्मल बिना कोई स्वर्ण-मुद्रा लिये ही घर लौट आया। शाम को जब रामदास घर आया तो निर्मल ने उसे सब कुछ बताया। सब कुछ सुनकर रामदास रोने लगा और उसने कहा, “अब राजा हमारे पूरे परिवार को जीवित नहीं छोड़ेगा क्योंकि राजा को उसकी प्रशंसा नहीं करने वाले व्यक्ति बिल्कुल पसंद नहीं हैं और तूने तो राजा को चुनौती दी है। पुत्र निर्मल, तू तुरंत यह राज्य छोड़ दे, हम भी यहाँ से कहीं चले जाते हैं, क्योंकि राजा सुबह हम सबको मरवा देगा; यदि जीवित रहे तो पुनः मिलेंगे।” रात्रि में ही रामदास एवं उसके पुत्र ने नंदपुर राज्य छोड़ दिया। निर्मल रात भर भागता रहा, उसे राजा को कहे गये वाक्यों का तनिक भी दुःख नहीं था लेकिन उसे अपने परिवार की सुरक्षा की चिंता थी। उसने मन

ही मन ठान लिया कि वह राजा को गलत साबित करके पुनः अपने परिवार के साथ रहेगा। भागते-भागते निर्मल एक ऐसे स्थान पर पहुंचा जहाँ बहुत शांति थी, पूरी रात्रि भागने के कारण निर्मल काफी थक गया था इसलिए वह तुरंत ही सो गया।

सुबह जब निर्मल की आँख खुली तो उसने देखा कि वह एक बहुत बड़े बगीचे में है। निर्मल ने देखा कि उस बगीचे की देखभाल एक माली, उसकी पत्नी एवं उसकी पुत्री करते हैं। निर्मल ने सोचा कि यदि वह ऐसे ही बाहर निकलेगा तो कभी न कभी लोग उसे पहचान ही लेंगे इसलिए उसने वहाँ पर नौकरी करने का निर्णय लिया। वह माली के पास गया एवं उससे नौकरी के लिये प्रार्थना की, क्योंकि माली को एक व्यक्ति की आवश्यकता थी जो उसकी, बगीचे के काम में सहायता करे इसलिए माली ने निर्मल को काम पर रख लिया। निर्मल अपनी बाल्यावस्था से ही बहुत मेहनती था और उसे सही गलत की समझ भी थी। अतएव निर्मल के अच्छे व्यवहार, मेहनत एवं कार्य के प्रति लगन से माली एवं उसका पूरा परिवार बहुत प्रभावित हुआ। चूँकि माली की पुत्री शालिनी अब विवाह योग्य हो गयी थी और उसकी माता को उसके विवाह की चिंता लगी रहती थी। वह अपने पति से अपनी पुत्री के लिये सदैव एक अच्छे वर के बारे में ही बातें करती थी। प्रतिदिन अपनी पत्नी द्वारा कहे जाने पर माली ने एक दिन अपनी पुत्री के लिये उचित वर ढूँढने का निर्णय लिया। वह प्रातःकाल ही सुन्दर वस्त्र पहनकर घर से बाहर निकला। बाहर निकलते ही उसकी पत्नी ने उससे कहा कि दामाद ऐसे बात करने वाला होना चाहिए जैसा कि हमारे बगीचे में काम करने वाला निर्मल। माली ने 'हाँ' में सिर हिलाया और जाने लगा तब पत्नी ने पुनः बोला कि दामाद ऐसा ईमानदार एवं सद्गुणी होना चाहिए जैसा कि हमारे बगीचे में काम करने वाला निर्मल। इस पर माली ने बोला कि जब तुमने निर्मल को पसंद कर ही लिया है, तो उससे ही बात कर लेते हैं, पुत्री के पति ढूँढने के लिये मुझे बाहर क्यों भेजती हो? दोनों ने निर्मल से विवाह के बारे में बात की तो निर्मल ने कहा कि वह एक बार शालिनी से अकेले में बात करके उसकी सहमति के बारे में जानना चाहता है। यदि वे अनुमति दें तो वह शालिनी से बात कर ले। माली एवं उसकी पत्नी सहमत हो गये। अपने माता-पिता के आग्रह पर सुशीला निर्मल से मिलने के लिए सहमत हो गयी। सुशीला से मिलके निर्मल ने उसे अपना सब वृत्तांत कह सुनाया। उसने बताया कि कैसे उसके नंदपुर राज्य का राजा हेमराज अपनी प्रशंसा के मद में चूर है, जिसके कारण स्वयं एवं अपने परिवार की सुरक्षा के लिए वह भाग रहा है, क्योंकि अगर राजा ने उसे पकड़ लिया तो वह उसे एवं उसके पूरे परिवार को मरवा देगा। पहले मुझे लगता था कि मैंने राजा को जो चुनौती दी उससे कोई फर्क नहीं पड़ेगा, किन्तु अब मुझे साफ दिखाई पड़ रहा है कि मेरे कारण ही मेरा पूरा परिवार दर-दर की ठोकर खा रहा है। मैं शादी करने को तो तैयार हूँ लेकिन मुझे नहीं पता मेरी शादी के बाद राजा हेमराज मेरे साथ क्या करेगा? अब मैंने अपना पूरा वृत्तांत बता दिया है, अब आप बताओ क्या आप अभी भी मुझसे विवाह के लिए तैयार हो?

सुशीला ने निर्मल की सभी बातों को ध्यानपूर्वक सुना और कहा कि वह अपना दिल छोटा न करे एवं उसे बताया कि वह उससे शादी के लिए तैयार है और उसके पास राजा की समस्या का भी हल है। उसने कहा कि वह उसके माता-पिता से दहेज में यह तीन चीज़ मांगे बाकी मैं बाद में बताऊंगी। निर्मल ने सुशीला के माता-पिता को बताया कि वह शादी के लिए तैयार है। शादी का दिन आ गया, शादी बहुत अच्छे से हुई और जब दहेज की बारी आई तब सुशीला के पिता ने निर्मल से पूछा कि उसे क्या चाहिए तब निर्मल ने उनसे कहा कि आपके पास जो पुराना बरगद का पेड़, पुराना वाला ढोल और

पुरानी रस्सी है मुझे वही चाहिए। उनकी यह बात सुनकर सुशीला के पिता ने कहा कि ये सारी वस्तुएं पुरानी हैं, बेटा कुछ और मांग लो यह पुरानी चीजें तुम्हारे किसी काम की नहीं। लेकिन निर्मल ने मना कर दिया, चूँकि सुशीला के पिता अपनी पुत्री को बहुत प्रेम करते थे इसलिए उन्होंने अपनी पुत्री के लिए वे सभी चीजें दहेज स्वरूप अपने दामाद निर्मल को दे दी। अब निर्मल के नंदपुर से आने के बाद का हाल सुनिए। अगले दिन हेमराज ने अपने सिपाहियों को आदेश दिया कि वे रामदास के घर जायें एवं उसे और उसके पुत्र निर्मल को बंदी बनाकर लायें। लेकिन रामदास के घर पर उसके परिवार में से कोई सदस्य नहीं मिला। राजा बहुत क्रोधित हो गया उसने अपने मंत्रियों से इस बारे में राय ली। राजा ने यह आदेश जारी किया कि रामदास एवं उसके पूरे परिवार को राजद्रोह के अपराध में मृत्यु दंड दिया जायेगा एवं जो कोई भी उनके बारे में सूचना देगा, उसे उचित इनाम दिया जायेगा, किन्तु जो उसकी सहायता करेगा, उसे मृत्युदंड दिया जायेगा। यह खबर आग की तरह चारों तरफ फैल गयी। रामदास एवं उसकी पत्नी अपने एक सम्बन्धी के यहाँ पर छिप कर रह रहे थे, किन्तु जैसे ही उन्हें राजा द्वारा इनाम एवं मृत्युदंड की सूचना मिली तो उन्होंने भय से उन दोनों को राजा के हवाले कर दिया। राजा ने उनके पुत्र निर्मल की गिरफ्तारी तक रामदास एवं उसकी पत्नी को कारागार में डाल दिया।

संध्या के समय निर्मल एवं उसकी पत्नी सुशीला ने नंदपुर में प्रवेश किया, उन दोनों ने अपना भेष बदला हुआ था। निर्मल के कुछ विश्वासपात्र मित्रों ने बताया कि राजा ने उसके माता-पिता को कारागार में डाल दिया है और वह निर्मल की तलाश में है। निर्मल ने सुशीला के साथ मिलकर राजा को सबक सिखाने एवं अपने माता-पिता को छुड़ाने की योजना बनाई। योजना के मुताबिक अगले दिन वे दोनों नट एवं नटनी का वेष बनाकर राजा हेमराज के दरबार में गये। उन्होंने राजा को बताया कि वे दूसरे राज्य से आए हैं और राजा को कुछ विशेष खेल दिखाना चाहते हैं। राजन आप के पास विशेष शक्तियाँ हैं इसलिए इस खेल को आप से बेहतर कोई नहीं समझ सकता। राजा हेमराज यह सब देखकर बहुत प्रसन्न हुआ। वास्तव में राजा के सामने कोई भी खेल दिखाने की हिम्मत नहीं करता था क्योंकि राजा खेल दिखाने वाले लोगों का खेल के अंत में बहुत मज़ाक उड़ाता था और कभी-कभी दंड भी देता था। राजा के आदेश से राज्य में विशेष खेल दिखाने की घोषणा कर दी गयी। कुछ ही समय में खेल देखने वालों का जमावड़ा लग गया।

राजा की आज्ञा पर खेल शुरू किया गया। निर्मल ने ढोल बजाना शुरू किया, ढोल बजते ही वह पुराना बरगद का पेड़ प्रकट हो गया, लोगों ने तालियाँ बजानी शुरू कर दीं। दूसरी बार ढोल बजने पर बरगद के पेड़ से रस्सी नीचे गिर गई, रस्सी को पकड़कर सुशीला ऊपर चढ़ती चली गयी। बरगद का वृक्ष काफी विशाल था इसलिए कुछ समय के बाद राजा को सुशीला दिखनी बंद हो गई। तीसरी बार ढोल बजाने पर एक व्यक्ति पेड़ से नीचे उतरा एवं उसने निर्मल से कहा कि उसने राजा के आदेश के अनुसार उसकी पत्नी का अपहरण कर लिया है। यह सुनकर निर्मल ज़ोर-ज़ोर से रोते हुए राजा से प्रार्थना करने लगा कि वह उसकी पत्नी को लौटा दे। चूँकि राजा तो इसे खेल समझ कर आनंद ले रहा था इसलिए वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा और बोला कि अब तेरी पत्नी तुझे कभी नहीं मिलेगी। यह सब दृश्य देखकर खेल को देखने आई जनता, जोकि पहले से राजा की वजह से काफी व्यथित थी, उसने राजा का विरोध करना शुरू कर दिया। निर्मल ने फिर से ढोल बजाया और अपनी पत्नी सुशीला को पुकार कर पूछा कि वह कहाँ है। सुशीला ने उत्तर में कहा कि राजा ने उसे बंदी बना रखा है। उसने उसे बताया कि राजा की नीयत सही नहीं है इसलिए राजा ने उसे अपनी सिद्धियों के बल पर कहीं छिपा रखा है। उसे नहीं पता

कि वह कहाँ है क्योंकि यहाँ बहुत अँधेरा है। सुशीला की आवाज़ सुनकर लोग राजा को बुरा-भला कहने लगे। यह सब देखकर राजा ने गुस्से में अपने शरीर का आकार काफी बड़ा कर लिया और निर्मल को मारने के लिए उसके पीछे दौड़ा। राजा को पास आते देखकर निर्मल ने फिर से ढोल बजाया और राजा ने तुरंत अपने आपको राजसिंहासन के ऊपर पाया। ऐसा कई बार हुआ, जब भी राजा निर्मल को मारने का प्रयास करता निर्मल तुरंत ढोल बजा देता। ढोल बजाने से हुई हतप्रभ घटनाओं एवं प्रजा के निर्मल को समर्थन से कुछ ही समय में राजा निराश महसूस करने लगा। अगली बार जब निर्मल ने ढोल बजाया तो राजा विशाल बरगद के पेड़ से लटक रही रस्सी से उल्टा लटक गया। राजा ने मदद के लिए पुकारा लेकिन राजा की मदद के लिए कोई आगे नहीं आया। निर्मल ने राजा से पूछा कि राजा बता, मेरी पत्नी कहाँ है? प्रजा ने भी पूरे मनोयोग से निर्मल का समर्थन किया और निर्मल के साहस की भूरि-भूरि प्रशंसा की। यह सब देखकर राजा ज़ोर-ज़ोर से रोने लगा और निर्मल से बोला कि उसने अपनी प्रजा से तारीफ़ पाने एवं उनकी नज़र में हमेशा बने रहने के लिए सिद्धि भी सीखी लेकिन सब व्यर्थ गया। वही मेरे लोग आज तुम्हारी तारीफ़ कर रहे हैं। मैं मानता हूँ कि मैंने स्वयं की प्रशंसा के लिए प्रजा के हित पर कोई ध्यान नहीं दिया, इसीलिए आज प्रजा मेरे खिलाफ़ है।

राजा ने आगे कहा, “मैं इस प्रकार उल्टा लटक रहा हूँ, मेरी सहायता करो, वैसे तो तुम्हारी पत्नी मेरे पास नहीं है, लेकिन मैं उसे ढूँढने में तुम्हारी सहायता करूँगा।” राजा की आँखों से आँसू टपक रहे थे, वह अपने किये पर पश्चाताप भी कर रहा था। राजा को इस प्रकार विनती करते देख निर्मल का हृदय पिघल गया। उसने फिर से ढोल बजाया और राजा रस्सी से मुक्त होकर नीचे आ गया। तब राजा ने निर्मल से पूछा कि वह कौन है? निर्मल ने बताया कि वह नंदपुर का ही रहने वाला है और रामदास का पुत्र है। मेरे द्वारा आपको चुनौती देने के कारण, तुम्हारे भयवश मुझे और मेरे परिवार को घर छोड़कर बाहर जाना पड़ा। तुमने मेरे माता-पिता को भी बंदी बना रखा है। तुमने सोचा था कि तुम सर्वश्रेष्ठ हो लेकिन आज तुम्हें अनुभव हो गया होगा कि हम हमेशा श्रेष्ठ नहीं होते, इस संसार में सदैव एक दूसरा बेहतर होता ही है। इसलिए जो भी हमारे पास हो उससे संतुष्ट होना चाहिए और ईश्वर का धन्यवाद करते हुए अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना चाहिए। राजन, आप तो राजा हो, आप की जिम्मेदारी तो एक सामान्य नागरिक से कहीं अधिक है। प्रजा का जीवन सुखमय होगा या दुखमय यह काफी हद तक राजा द्वारा लिए गये निर्णयों पर निर्भर करता है। निर्मल की बात सुनकर राजा ने प्रजा के समक्ष ही निर्मल से क्षमा मांगी और तुरंत ही निर्मल के माता-पिता को कारागार से बाहर निकाल दिया। सब ने निर्मल से पूछा कि उसकी पत्नी कहाँ है? तब निर्मल ने आखरी बार ढोल बजाया और तुरंत उसकी पत्नी सुशीला बरगद के वृक्ष से नीचे आ गयी और बरगद का वृक्ष भी सभी की आँखों से ओझल हो गया। निर्मल अपने माता-पिता एवं अपनी पत्नी के साथ पुनः अपने राज्य में ही रहने लगा। रामदास ने पूछा कि निर्मल बेटा तूने यह सब कैसे किया और यह ढोल कैसे काम करता है? इस प्रश्न का उत्तर सुशीला ने दिया। सुशीला ने बताया कि ये ढोल, रस्सी और बरगद का वृक्ष उसके दादा जी को एक बहुत ही उच्च सिद्ध पुरुष ने उनकी सेवा से प्रसन्न होकर दिए थे। इन वस्तुओं का उपयोग केवल हमारे परिवार के लोग ही कर सकते हैं क्योंकि निर्मल से मेरी शादी में मेरे पिता ने ये सब वस्तुएं दहेज़ स्वरूप प्रदान की थीं इसलिए वे भी इनका उपयोग कर पाये। यह सब सुनकर रामदास बहुत प्रसन्न हुए और उसने अपने पुत्र और पुत्रवधू की बहुत प्रशंसा की और साथ ही साथ यह सबक भी लिया कि हमें कभी अहंकार नहीं करना चाहिये बल्कि मेल-जोल से, विनम्रता के साथ जीवन यापन करना चाहिए।



मोहित तोमर
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

एक यात्री की लेह-लद्दाख यात्रा

नमस्कार मित्रों! मेरा नाम मोहित तोमर है और मैं मार्च 2022 से कार्यालय प्रधान निदेशक (इनफ्रास्ट्रक्चर) में कार्यरत हूँ। जिस सफर के विषय में मैं आपको बताना चाहता हूँ, वह श्रीनगर, जम्मू एवं कश्मीर है, जहाँ मैं वर्ष 2017 से 2020 तक कार्यरत रहा। वहाँ के सुंदर स्थानों पर जाकर उसके प्राकृतिक सौंदर्य को देखने तथा अनुभव करने का अवसर मिला। कश्मीर धरती का स्वर्ग है, यदि वहाँ की परिस्थितियों को ध्यान में न रखा जाए, जोकि पूर्व समय में रही है, तो वहाँ जाकर इस प्राकृतिक सौंदर्य का अनुभव सभी को जीवन में एक बार अवश्य लेना चाहिए।

मैं आपको वर्ष 2018 के अपने एक यात्रा वृत्तांत के बारे में बताने जा रहा हूँ। मेरे कुछ मित्रगण घूमने के लिए दिल्ली तथा गुरुग्राम से अपने निजी वाहनों से कश्मीर पहुँचे। उनको श्रीनगर तथा आसपास के स्थान, कारगिल का वार-मेमोरियल, लेह-लद्दाख देखना था। वो नगीन लेक में हाउस बोट में रुके थे, मैं उनसे मिलने पहुँच गया और मैंने भी बातों ही बातों में आगे के सफर में उनके साथ चलने की इच्छा व्यक्त की। मेरे मित्रों को ये बात अच्छी लगी और उन्होंने बताया कि वे अगले दिन सुबह नाश्ता करके निकलेंगे, क्योंकि मैं वहाँ काफी समय से रह रहा था तो उन सभी को मुझे साथ ले जाना अच्छा लगा। रास्ते में खाने के लिए मैगी, पुलाव और बनाने के लिए छोटा स्टोव, कुकर, पैन आदि मित्र साथ में रख के लाये थे, क्योंकि उनको रोड़ ट्रिप के सारे अनुभव लेने थे।

सुबह नाश्ता करने के बाद हम सभी निकल पड़े उस यात्रा पर जो जीवन में कभी-कभी कर पाते हैं। सफर का पहला पड़ाव था सोनमार्ग। कश्मीर में एक बात बहुत खास है कि यहाँ पर नदी किनारे इतनी सुन्दर आवाज आती है कि मन करता है कि आप वहीं बैठे रहें। घंटों बीत जाते हैं लेकिन समय का पता ही नहीं लगता है। सोनमार्ग श्रीनगर से 80 किलोमीटर की दूरी पर है। श्रीनगर से हम लोग सोनमार्ग 12 बजे पहुँच जाते हैं। यहाँ से जोजिला दर्रा और बाल्टाल पास में ही है। सोनमार्ग से लगभग 10 से 12 किमी आगे चलने पर बाल्टाल पहुँच जाते हैं। यहाँ पर कई झीलों के ट्रैक भी हैं, जहाँ पर काफी पर्यटक जाते हैं। लगभग आधा घंटा यहाँ रुकने के बाद हम लोग आगे की तरफ बढ़ जाते हैं। बाल्टाल से श्री अमरनाथ जी की यात्रा शुरू होती है। कश्मीर में दो स्थानों से श्रावण माह में श्री अमरनाथ जी की यात्रा शुरू होती है - बाल्टाल और चंदनवाड़ी घाटी।



सोनमर्ग के पास सिंध नदी



रास्ते का एक दृश्य

बाल्टाल से आप सुबह जल्दी यात्रा आरंभ करके देर शाम से वापस कैंप में लौट सकते हैं, जबकि आपको चंदनवाड़ी की ओर से जाने में दो से तीन दिन का समय लग जाता है। बाल्टाल से श्री अमरनाथ जी के लिए हेलिकॉप्टर की सुविधा भी उपलब्ध है। बाल्टाल से आगे लगभग 10 किमी. का सफर तय करने के बाद एक और महत्वपूर्ण स्थान आता है, जिसे ज़ीरो पॉइंट कहते हैं। ज़ीरो पॉइंट में तापमान सामान्यतः शून्य से कम ही रहता है। यहाँ कुछ समय रुकने के बाद हम लोग आगे बढ़ जाते हैं।



बाल्टाल श्री अमरनाथ जी यात्रा कैंपसाइट



ज़ीरो पॉइंट

यहाँ से आगे बढ़ने के बाद शाम को चार बजे हम सभी कारगिल वॉर मेमोरियल, जिसे कि द्रास वॉर मेमोरियल भी कहा जाता है, वहाँ पहुँच जाते हैं। यह कारगिल शहर से 05 किलोमीटर की दूरी पर श्रीनगर-लेह राष्ट्रीय राजमार्ग पर टाइगर हिल पर स्थित है। कारगिल वॉर मेमोरियल को कारगिल युद्ध (1999) में शहीद हुए हमारे वीर जवानों के बलिदान को याद रखने के लिए भारतीय सेना ने वर्ष 2000 में बनाया और इसके वर्तमान डिज़ाइन के अनुरूप निर्माण भारतीय सेना द्वारा वर्ष 2014 में किया गया। प्रतिवर्ष 26 जुलाई कारगिल विजय दिवस के रूप में यहाँ पर धूम-धाम से मनाया जाता है। हम सभी भारतीयों को एक बार तो अवश्य यहाँ पर आना चाहिए। यहाँ उन वीर जवानों के बलिदान तथा कारगिल युद्ध में विजय प्राप्ति को डॉक्यूमेंट्री के रूप में दिखाया जाता है। उसे देखने के बाद हम सब लेह-लद्दाख की ओर निकल पड़ते हैं। कारगिल वार मेमोरियल में ही हमें शाम हो जाती है और हम आगे के सफर पर निकल पड़ते हैं। दिन ढल गया था, शाम हो गयी थी और इस मौसम और प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हुए हम आगे बढ़े। 175 किमी. का सफर तय करने पर रात के लगभग 11 बजे हमने खलसी नाम की जगह पर रुककर रात्रि भोजन किया। हमें कहीं भी सोने के लिए जगह नहीं मिल पाई तो हम लेह की यात्रा पर आगे बढ़ गए।



कारगिल वॉर मेमोरियल



कारगिल वॉर मेमोरियल

उसके बाद लगभग 70 किमी. आगे रात के 03:00 बजे हम लोग पहुँच जाते हैं मैग्नेटिक हिल जोकि सैलानियों के लिए एक अद्भुत जगह है। यहाँ पर गाड़ी नीचे से ऊपर की ओर चढ़ने लग जाती है। पहले सिर्फ सुना था वहाँ जाकर इसे देखने का भी अवसर मिला और हम सभी मित्र इस अनुभव को देखकर चौंक उठे। रात का समय था इसलिए वहाँ पर हम लोग कोई फोटो वगैरह नहीं खींच पाए। मैग्नेटिक हिल से लेह 30 किमी. ही दूर था, तो हम लोग यहाँ से सुबह 4:30 बजे लेह पहुँच जाते हैं। वहाँ जाकर हमने जगह-जगह होटल में कमरे का पता किया लेकिन हमें कहीं भी कमरा नहीं मिला। फिर हमने वापस आकर एक डोरमेट्री बुक की। जिसमें 20 सिंगल बेड लगे हुए थे। सभी थके थे, तो सबने अपना-अपना बिस्तर पकड़ा और सो गए। फिर किसी ने बोला आज यहाँ जाना है, वहाँ जाना है। उसको किसी ने चुप करा के बोला, “भाई ऐसी जगह आके हमें यहाँ की जलवायु के अनुकूल होने में समय भी तो लगेगा।” तो ऐसे हमने अनुकूलन के लिए दोपहर तक विश्राम किया। मैं तो कश्मीर में काफी समय से था तो मुझे ऐसी कोई परेशानी नहीं हुई। हम में से एक या दो को सांस में कुछ भारीपन लग रहा था। सावधानी के रूप में ऑक्सीजन का छोटा सिलिंडर और कुछ दवाइयाँ साथ में थी, जिससे हमें सहायता हुई।



शांति स्तूप से लेह शहर की एक झलक

फिर हम लोग निकल पड़े भोजन की तलाश में, वहाँ काफी सारे रेस्तरां और कैफे थे। हमने भोजन करने के बाद शांति स्तूप जाने का निर्णय लिया। सब लोग सहमत हुए और निकल पड़े। लेह में अंडर पार्किंग बनी हुई है, परंतु पार्किंग तक पहुँचने और बाहर आने में काफी समय लगा। शांति स्तूप में जाकर एक

अलग ही अनुभव हुआ। वहाँ उसके नाम के अनुरूप बहुत शांति थी और वहाँ से लेह शहर का नज़ारा बहुत ही सुंदर लग रहा था। ये स्तूप विश्व का सबसे ऊँचा शांति स्तूप है, इसकी समुद्र तल से ऊँचाई 3909 मीटर है। इसकी नींव 1985 में 14वें दलाई लामा द्वारा रखी गयी थी।



शांति स्तूप



शांति स्तूप

अब हमारा अगला पड़ाव, तुरतुक से होते हुए थाँग गाँव था। लेह से तुरतुक की दूरी जोकि 210 किमी के आसपास थी, हमने दो हिस्सों में पूरी की। पहले दिन हम लोग 110 किमी ही सफर कर पाये और रात में डिसकित में रुकने की योजना बनाई। वहाँ पर हमने एक टेंट के लिए बात की जोकि हमें 2500 रुपये में मिल गया। रात में आग जला के पुलाव बनाया और खाकर सब लोग सो गए। सुबह-सुबह कुछ शोर आया तो हम लोग उठकर बाहर गए। बाकी लोग आगे के सफर के लिए निकल रहे थे। हम लोग भी हाथ मुँह धोकर पास के एक पॉइंट की ओर चले गए। वहाँ जाके पता चला की ये जगह एक रेगिस्तान है, जोकि दुनिया के सबसे ऊँचे रेगिस्तानों में से एक है, जिसका नाम हुंडर है। यहाँ पर हमने डबल हंप वाले ऊंट देखे। डबल हंप वाले ऊंट की सवारी करके हम लोग निकल पड़े थाँग की ओर।

थाँग हमारे देश का आखिरी गाँव है। ये गाँव साठ के दशक में दो भागों में बंट गया था। आधा भाग श्योक नदी के इस पार भारत में तथा आधा नदी के उस पार, पाक अधिकृत कश्मीर में है। थाँग में रुकने की कोई व्यवस्था नहीं है, तो हम लोग शाम में पहुँचकर तुरतुक में डुकटुक नामक होटल में रुक गए और अगली सुबह थाँग के लिए निकल पड़े। रास्ते में भारतीय सेना की चेक-पोस्ट पड़ी। वहाँ पर हमें एक टूरिस्ट पास दिखाना था। जिसे दिखाने के बाद ही थाँग के लिए जा पाते। ये पास हमने पहले ही दिन लेह टूरिस्ट रिसेप्सन केंद्र से ले लिया था। पास दिखाने के बाद लगभग 11 किमी. चलते ही हम लोग थाँग पहुँच गए। यहाँ आकर अलग ही अनुभव हुआ। कुछ समय बिताने के बाद हमने यहाँ मैगी और कश्मीरी कावा पीते समय सोचा कि यहाँ का जीवन कितना कठिन है, उस समय तक वहाँ पर बिजली जेनेरेटर की सहायता से आती थी। नेटवर्क कभी-कभी आता था और वहाँ के निवासियों की भारतीय सेना पर निर्भरता को हमारे वीर जवान बड़ी तत्परता से निभाते हैं। ये सब देखकर भारतीय सेना पर विश्वास और दृढ़ हो गया। हम सबने दूरबीन से नदी के उस पार दूसरे देश की पोस्ट को देखा, भारतीय सेना की मराठा रेजीमेंट के जवानों को धन्यवाद दिया और राष्ट्रगान गाने के बाद हम लोग अगले पड़ाव की ओर निकल पड़े।



डबल हंप ऊंट



थाँग गाँव- भारत का आखिरी गाँव

उसके बाद हम लोग वहाँ से कभी न मिटने वाली यादों को लेकर निकल पड़े, अगले पड़ाव की ओर जो कि था पेंगोंग लेक। ये लेक श्री इंडियट्स मूवी के बाद काफी सुर्खियों में आई। ये भारत और चीन सीमा पर है। इसका 30% भाग भारत में और लगभग 70% भाग चीन की तरफ है। ये साफ पानी की झील है। थाँग से ये लेक लगभग 330 किमी दूर थी, हम लोग सुबह जल्दी तुरतुक से निकले और पूरा दिन सफर करते-करते रात को 11 बजे के आसपास पेंगोंग लेक पहुंच जाते हैं। रास्ते में कभी गाड़ियाँ मिली, कभी रास्ता सुनसान मिला, लेकिन ये जगह अपने आप में स्वर्ग है। पेंगोंग लेक के पास ही टेंट में रुकने और खाने की व्यवस्था हो जाती है। रात का खाना भी हम लोग खुद बना के खाके सो जाते हैं। अगली सुबह हम निकल पड़ते हैं इस सुंदर लेक को देखने। पेंगोंग लेक के पास खींची गई एक फोटो जोकि मुझे बहुत पसंद है, आपके सम्मुख है। आप भी कभी लेह लद्दाख घूमकर आइये, अच्छा अनुभव रहेगा।



पेंगोंग लेक का एक दृश्य

पेंगोंग लेक से मैं और मेरा एक मित्र शाम तक लेह पहुँच जाते हैं। शाम में कुछ हल्का भोजन करने के बाद हम श्रीनगर के लिए टैक्सी लेते हैं और सुबह श्रीनगर पहुँच जाते हैं। अभी के लिए इतना ही और लेखन में मुझे इतना ज्यादा अनुभव नहीं है ये आपके सम्मुख एक प्रयास है, उम्मीद है आपको अच्छा लगे।



अमित कुमार
लेखापरीक्षक

मेरी माँ

जब से उसकी गोद में आया
नया जीवन मैंने पाया
सीने से जब उसने लगाया
एक अजीब सा आनंद आया
जिसने मुझको जीवन का
पहला अमृत पान कराया

नन्हें-नन्हें हाथ पकड़कर
चलना उसने मुझे सिखाया
हर मंदिर हर तीर्थ में
मेरी खातिर शीश झुकाया
खरी-खोटी सब सुनकर भी
जिसने मुझ पर अमृत बरसाया

जब भी आँसू मेरे आये
सर मेरा उसने सहलाया
अपने पल्लू की छाँव से
धूप से उसने मुझे बचाया
बुरी नज़र से बचने को
काला टीका मुझे लगाया

नींद न आई जब भी मुझको
लोरी गाकर मुझे सुलाया
पता नहीं था कुछ भी मुझको
भला-बुरा सब उसने बताया
डरता था जब दुनिया से मैं
आगे बढ़कर मुझे बचाया

हाथ पकड़कर जिसने मुझको
स्कूल का रास्ता दिखलाया
नये-नये बहानों से
जिसने मुझको खूब पढ़ाया
पढ़ा-लिखाकर जिसने मुझको
काबिल एक इन्सान बनाया

जिसने मुझको जीवन का
हर एक पहलू समझाया
मेरी खातिर जिसने
अपने चश्मे का नम्बर बढ़वाया
शादी करवाकर मेरी
घर मेरा जिसने बसवाया

जब भी थका जब भी हारा
हौसला मेरा उसने बढ़ाया
मेरी खातिर जिस माँ ने
अपना पूरा जीवन खर्चाया
जीवन की इस भाग-दौड़ में
उस माँ को मैंने बिसराया
जीवन की इस भाग-दौड़ में
उस माँ को मैंने बिसराया।



मनोज कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सैनिक की कलम से

मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर तुम देना फेंक।
मातृ-भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जावें वीर अनेक॥

“भारतीय सेना” अर्थात हमारे देश का “सुरक्षा कवच”, यह देश के दुश्मनों से हमारी रक्षा करती है। अपनी जान व अपने परिवार की फिक्र किये बिना दिन-रात अपने देश व देशवासियों को सुरक्षा प्रदान करती है। भारत की आज़ादी के बाद से भारतीय सेना ने पाकिस्तान की सेना को चार बार हराया है (वर्ष 1948, 1965, 1971 तथा 1999 का कारगिल युद्ध)। मैं भी भारतीय थल सेना का एक सैनिक रहा हूँ और सेना की सेवा के दौरान हुए कुछ अनुभव साझा करना चाहता हूँ, जिसमें एक सैनिक किस प्रकार पाकिस्तानी सेना से युद्ध में अपने साहस का परिचय देता है। वर्ष 1988 की बात है जब मुझे भारतीय थल सेना में भर्ती होकर देश की सेवा करने का मौका मिला।

कई कठिन प्रशिक्षण लेने के बाद मेरी पहली पोस्टिंग ‘फिरोजपुर हुसैनीवाला (पंजाब)’ पाकिस्तान बॉर्डर पर हुई, जहाँ पाकिस्तान के रेंजर आमने-सामने कुछ दूरी पर रहते थे। फिरोजपुर किले में हमारी यूनिट थी, वहाँ से यूनिट की पोस्टिंग, अरुणांचल प्रदेश के खोंसा स्टेशन हुई जोकि तिरप जिले के अंतर्गत आता है। तिरप एक ऐसा जिला है जिसकी सीमायें चीन और म्यांमार से लगती हैं और अक्सर चीन अरुणांचल के कुछ क्षेत्र को लेकर अपना दावा करता रहता है। वहाँ हमारी डेल्टा कंपनी को दूर-दराज़ के चीनी सीमावर्ती गाँव की एक पहाड़ी पर पोस्ट किया गया। उस समय स्थानीय आतंकवाद और चीन से मुकाबला था। हम रात को पेट्रोलिंग कर किसी अनजान जंगल में अपना ठिकाना बनाकर चौकसी करते तथा दुश्मन पर नजर रखते थे। वहीं से मुझे अपनी यूनिट से ‘यूनिट एजुकेशन इंस्ट्रक्टर (यूईआई)’ कोर्स की ‘बीटा ग्रेडिंग’ के लिए ‘एईसी सेंटर पचमढ़ी (मध्य प्रदेश)’ में तीन महीने के लिए भेजा गया। इसी दौरान हमारी बटालियन को जम्मू और कश्मीर के मेथर स्टेशन में पोस्ट किया गया, उस समय

खासकर कश्मीर, आतंकवाद की आग में झुलस रहा था और आतंकवाद चरमसीमा पर था। हमें वहाँ की आम जनता की सुरक्षा का जिम्मा दिया गया। पाकिस्तान से प्रायोजित आतंकवादी कब कहाँ हमला कर दें, पता नहीं था, लेकिन भारतीय सेना बिना किसी स्थानीय निवासी को नुकसान पहुँचाए आतंकवाद से मुकाबला कर रही थी। बुज़दिल आतंकवादी कभी सामने से वार नहीं करते थे, छिपकर घात लगाकर वार करते थे, जिस वजह से कई बार हमारे सैनिकों को नुकसान उठाना पड़ता था। कहते हैं गोलियों का उपयोग करने वाला व्यक्ति, बदले में फूलों की उम्मीद नहीं कर सकता। इसका उत्तर देने के लिए हमें रणनीति का सहारा लेना पड़ा और मौका मिलते ही उनको सही उत्तर मिलने लगा। उस समय आतंकवादी ग्रुप- लश्कर-ए-तैयबा, जैश-ए-मोहम्मद, हिजबुल मुजाहिद्दीन, अल-बद्र काफी सक्रिय थे। इसी दौरान हमारी यूनिट की 'डेल्टा कंपनी' सुरनकोट नामक एक पोस्ट पर लगाई गयी। उस समय पाकिस्तानी सेना अक्सर सीज़-फायर का उल्लंघन करती थी और उसी की आड़ में सेक्टर किरनी का सीमावर्ती इलाका जो भारत की एक पोस्ट थी, उस पर पाकिस्तानी सेना ने कब्ज़ा कर लिया था। हमारी कंपनी को आदेश मिला कि हमें दुश्मन से कब्ज़ा लेना है। उसी दौरान वहाँ 'ऑपरेशन रक्षक' चल रहा था जिसके अंतर्गत एक छद्म युद्ध की शुरुआत हुई और युद्ध के प्रारंभिक दिनों में हमें पता नहीं चल पा रहा था कि पहाड़ियों पर बैठे मुट्ठीभर, आतंकवादी हैं या पाकिस्तानी सेना के जवान।

सितम्बर 1991 की रात जब देश में जन्माष्टमी धूमधाम से मनाई जा रही थी तब हम पाकिस्तानी सेना की गोलियों और बमों का जवाब दे रहे थे। जब जवान सेना की हरी वर्दी धारण कर लेता है तो शौर्य और पराक्रम स्वतः ही आ जाता है। हम धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थे, हमें पहाड़ी से नीचे आकर नदी (जिसमें पानी कम था) को पार कर पुनः पहाड़ पर चढ़कर दुश्मन से मुकाबला करना था और अपनी पोस्ट पर तिरंगा फहराना था। जैसे ही हम नीचे उतरे और नदी पार करने लगे तभी दुश्मन की तरफ से हैवी फायरिंग आनी शुरू हो गयी।

नदी पार करने के बाद पहाड़ पर चढ़ना शुरू करते ही हमारे ऊपर अचानक गोलियों की बरसात होने लगी लेकिन हमें अपने लक्ष्य पर आगे बढ़ना था। गोलियाँ हमारे दायें-बाएं से निकल रही थीं तथा जिन्दगी और मौत के बीच सिर्फ एक अंगुल की दूरी थी लेकिन हम पीछे नहीं हट सकते थे। रणनीति के तहत हमने तीन तरफ से हमला किया, दुश्मन हमसे कुछ ही दूरी पर थे। जैसे ही हम गोलियों और आर्टिलरी सेलिंग से बचते हुए आगे बढ़े तभी पैरा फायर होता है जिससे ऊपर रोशनी होती है, उसी चंद सेकंड की रोशनी में दुश्मन गोलियाँ और बम मारता है। उसी वक्त एक बम के कुछ टुकड़े मुझे और मेरे अन्य साथी जवानों को लगते जिससे हम गंभीर रूप से घायल हो जाते हैं। जब कोई सैनिक घायल या शहीद होता है तो उसके साथियों को दुःख होता है और उसका बदला लेने के लिए रोम-रोम गुस्से से भर जाता है। हमें दुश्मन को मारना था और कब्ज़ा लेना था। मेरे पास एके-47 थी जो कि क्षतिग्रस्त हो गयी थी और केवल 2 हैण्ड ग्रेनेड बचे थे। चेहरे और हाथ पर छर्रे लगने के कारण आगे बढ़ने में दिक्कत आ रही थी लेकिन तब तक हमारी एक प्लाटून आ चुकी थी, उन्होंने मोर्चा सँभालकर रिकवरी फायर देते हुए चौकी पर धावा बोला जिसमें पाकिस्तान का एक मेजर और कई अन्य जवान मारे गये। हमने अपनी पोस्ट पर कब्ज़ा कर लिया था। हम घायल हो चुके थे और हमें नीचे उतरना था, हमें प्राथमिक चिकित्सा के लिए 3 से 4 किलोमीटर चलना था, इस दौरान पाकिस्तान की सेना हमारे ऊपर फायर कर थी, किन्तु हम प्राथमिक चिकित्सा पोस्ट तक पहुँच गये थे। हमें वहाँ आगे चलकर सैनिक अस्पताल, उपचार हेतु दाखिल किया गया। कई दिनों तक अपने साथ के सैनिक जो शहीद हो गये थे, उनके बारे में सोच कर

भी शरीर में अजीब सी सिहरन हो जाती थी, आँखों में आँसू आ जाते थे। कुछ साथियों के बारे में अस्पताल में पता चला कि कौन-कौन घायल हैं, तो लगा कि चलो ज़िन्दा तो हैं।

ये बात उस समय की है जब शादी के 5 दिन बाद ही मुझे इयूटी ज्वाइन करनी होती है। उसके 2 महीने बाद ही पाकिस्तान से युद्ध हो जाता है। ज़िन्दगी और मौत की लड़ाई में ज़िन्दगी जीत जाती है। यूनिट से एक पत्र घर जाता है जिसमें लिखा होता है कि आपका पुत्र सैनिक मनोज कुमार दुश्मनों से मुकाबला करते हुए घायल हो गया है, आगे उसकी स्थिति संतोषजनक है और सैनिक अस्पताल में उसका इलाज चल रहा है। उस वक्त घर वालों का क्या हाल रहा होगा अंदाजा नहीं लगा सकते, खासकर उस पत्नी का जिसकी मेंहदी का रंग भी नहीं मिटा था। उस पत्नी की क्या मनोदशा रही होगी किन्तु उसके धैर्य और साहस तथा परिवार वालों की दुआओं से मैं सकुशल था।

एक साधारण सा लड़का जब सेना में भर्ती होता है तो उसके अंदर एक जज़्बा होता है कि देश के लिए कुछ करना है और भर्ती होकर प्रशिक्षण के बाद जब एक वीर योद्धा के रूप में उसका उदय होता है तो उसे जल, थल, वायु, अग्नि कहीं भी जाकर अपनी मातृभूमि, अपने देश के लिए कुर्बान होने का मौका मिले तो पीछे नहीं हटता है।

जो भरा नहीं है भावों से, जिसमें बहती रसधार नहीं।

वह हृदय नहीं वह पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं।।

यह मेरा सेना में एक सैनिक के रूप में किये गये कार्य का एक संक्षिप्त वर्णन था, हम अपने जीवन में किसी भी कार्य से जुड़े हों, उसमें पारदर्शिता और ईमानदारी से कार्य करें, यह भी एक राष्ट्रभक्ति है। हम किसी भी कार्य को सच्चाई के साथ करते हैं तो राष्ट्रभक्ति स्वतः ही आ जाती है।

मैं रहूँ या न रहूँ यह देश रहना चाहिए।

पुणे, महाराष्ट्र में आयोजित हिंदी दिवस समारोह - 2023 संबंधी

छायाचित्र







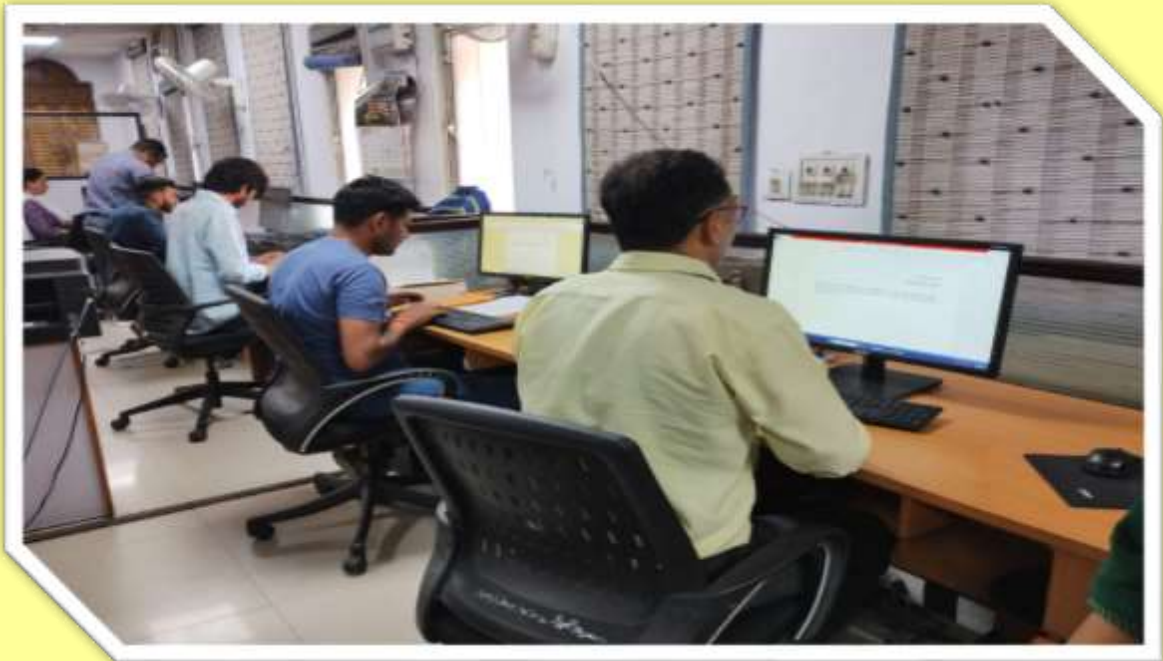


हिंदी दिवस एवं तृतीय अखिल भारतीय राजभाषा सम्मलेन में राजभाषा कीर्ति पुरस्कार के अंतर्गत भारत के नियंत्रक एवं महालेखापरीक्षक कार्यालय को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। पुरस्कार ग्रहण करते हुए श्री भवानी शंकर, महानिदेशक (राजभाषा)

कार्यालय में 'हिंदी पखवाड़ा' के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं
के छायाचित्र



हिंदी श्रुतलेख प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



हिंदी टंकण प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



सांकेतिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



सांकेतिक अभिव्यक्ति प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



हिंदी अनुवाद प्रतियोगिता में भाग लेते हुए प्रतिभागी



कार्यालय में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए श्री मनोज कुमार झा, स.ले.प.अ.



कार्यालय में आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में व्याख्यान देते हुए सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी



हिंदी समापन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करती प्रधान निदेशक महोदया श्रीमती अतूर्वा सिन्हा



हिंदी समापन के अवसर पर दीप प्रज्ज्वलन करते हुए उप-निदेशक महोदय (इन्फ्रा-॥ तथा आरटीएच अनुभाग (बाएँ से दाएँ)



विभागीय वार्षिक गृह पत्रिका "संवाद" के पंचम अंक का लोकार्पण करते हुए
 प्रधान निदेशक महोदया श्रीमती अतूर्वा सिन्हा, उप-निदेशक महोदय श्री पी.के.
 साबूकुट्टन तथा उप-निदेशक महोदय श्री अभिषेक जैन (बाएँ से दाएँ)



हिंदी समापन के अवसर पर उपस्थित अधिकारी/कर्मचारीगण



हिंदी समापन के अवसर पर सरस्वती वंदना प्रस्तुत करते हुए कर्मचारीगण



मंच संचालन करती हुई डॉ. अनुराधा जोशी, कनिष्ठ अनुवादक



हिंदी समापन समारोह की समाप्ति पर धन्यवाद ज्ञापन प्रकट करते हुए
श्री अंकित शर्मा, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



हिंदी समापन समारोह के अवसर पर कार्यालय में हिंदी के प्रगामी प्रयोग एवं हिंदी की प्रगति से सभी को अवगत करातीं सुश्री पूनम शर्मा, हिंदी अधिकारी

कार्यालय में 'हिंदी पखवाड़ा' के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं
के विजेता







राजभाषा परिवार

53

संवाद



“हिंदी हमारी मातृभाषा है,
इसे हर दिन बोलें ।

सबको हिंदी में बोलने के लिए उत्साहित करें ।”

“टिप्पणियाँ हिंदी में लिखें ।

मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए ।

शब्दों के प्रयोग के लिए अटकिये नहीं ।

अशुद्धियों से घबराइये नहीं ।

अभ्यास अविलम्ब आरम्भ कीजिए ।”

“भारत के विकास में हिंदी का
योगदान अति महत्वपूर्ण है।

यदि हम भारत को विकसित
देश के रूप में देखना चाहते हैं।

तो हिंदी के महत्व को हम सबको समझाना होगा।”





चंद्रयान 3 - “एक ऐतिहासिक सफलता”

55



आत्मनिर्भर भारत



हमें विनिर्माण क्षेत्र का निर्माण करने की जरूरत है।
मैं दुनिया को बताना चाहता हूँ,
आओ. भारत में बनाने के लिए



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest



कार्यालय प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (अवसंरचना), दिल्ली

